भारत ज्ञान विज्ञान समिति
विंग न. 6, ब्लॉक नं. II, आर.के. पुरम, सेक्टर-1
द्वारा प्रकाशित फोन : 607911

कविताओं का चयन अमिताभ
चित्र एवं सज्जा विभास दास

Printed at Progressive Printers, Delhi-95 (Phone : 2282847)

धमक धम

बाल गीतों का संकलन

ताती ताती तोता

ताती ताती तोता। पिंजरे में सोता।
पंख जो हरे थे। उड़न से भरे थे।
पड़ गए हैं पीले। हो गए हैं ढीले।
ताती ताती तोता। पिंजरे में सोता।
ताती ताती तोता। पिंजरे में रोता।
झाँकते हैं तारे। नन्हें-नन्हें प्यारे।
कहते प्यारे तोता, काहे को तू रोता।
अंधकार छोड़ दे। पिंजरे को तोड़ दे।
उड़ते-उड़ते सारी रात।
आ मिल जा हम सबके साथ।
छोटा भाई तोता प्यारा।
तू भी बन जा एक सितारा।

हरिन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय

गुलगुली

रेंग, रेंग कर चलने वाली,
ए ! री ! सूँडी गुलगुली
तितली एक बन जायेगी,
धूप को तेज़ जब पायेगी।

नाच, नाच कर उड़ने वाली,
ओ ! री! तितली पीली !
सूँडी तू भी थी कभी,
रेंग, रेंग कर चलती।

लिलियन शुल्ज़

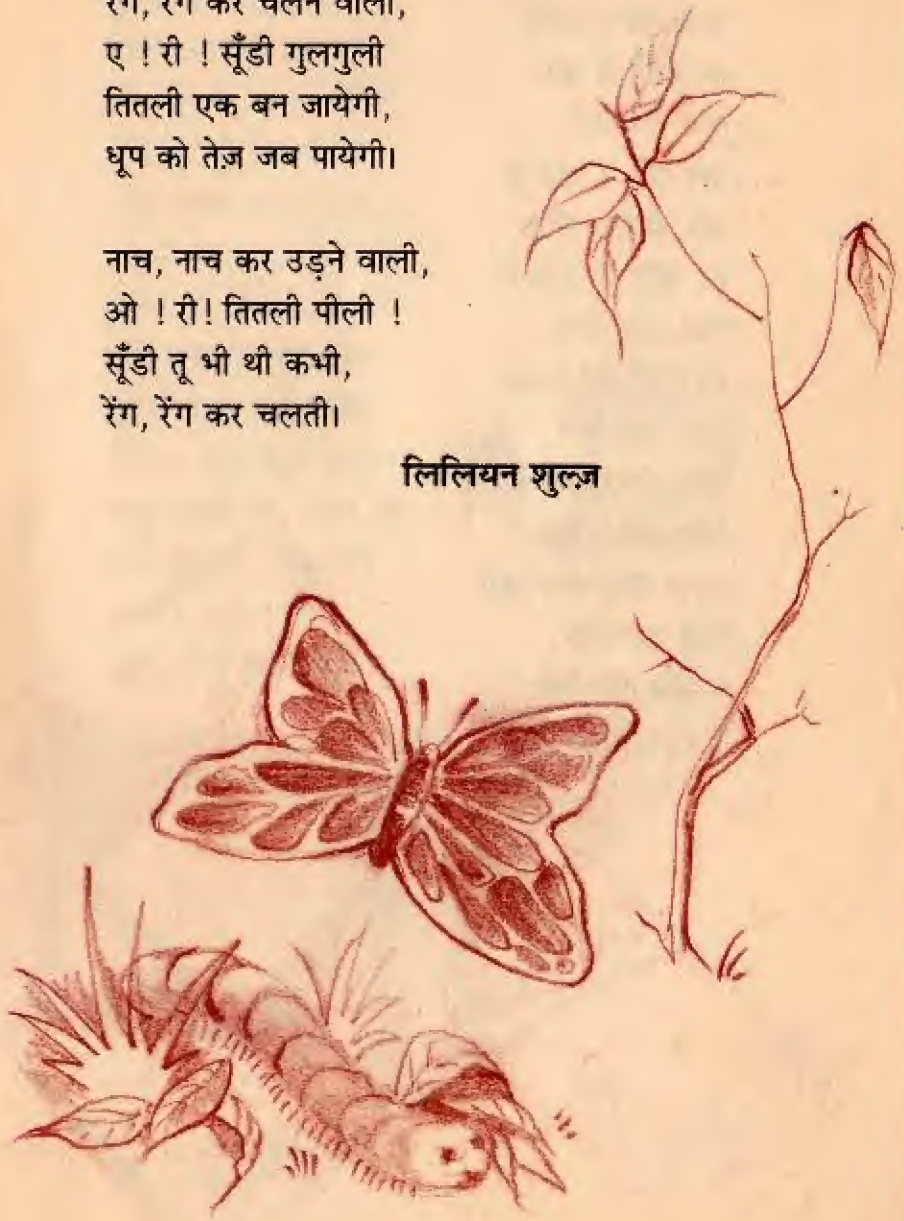

एक कीड़ा

एक रूमाल अज़ी बसा
बारह कोण उसके
हर कोणे में बाँधे
तीस तीस दाने
दाने दाने में रहते हैं
ऐसे चौबीस कीड़े
हर कीड़े के होते हैं
साठ साठ टँगडे
हर टँगड़े पर उसके
साठ साठ बाज
ऐसा कीड़ा देखा है?
ऐसा कोई रूमाल?
कीड़ा दौड़े चल आगे
पीछे नहीं देखे
अज़ीब दौड़ तेरी
तू कहीं चल रे?

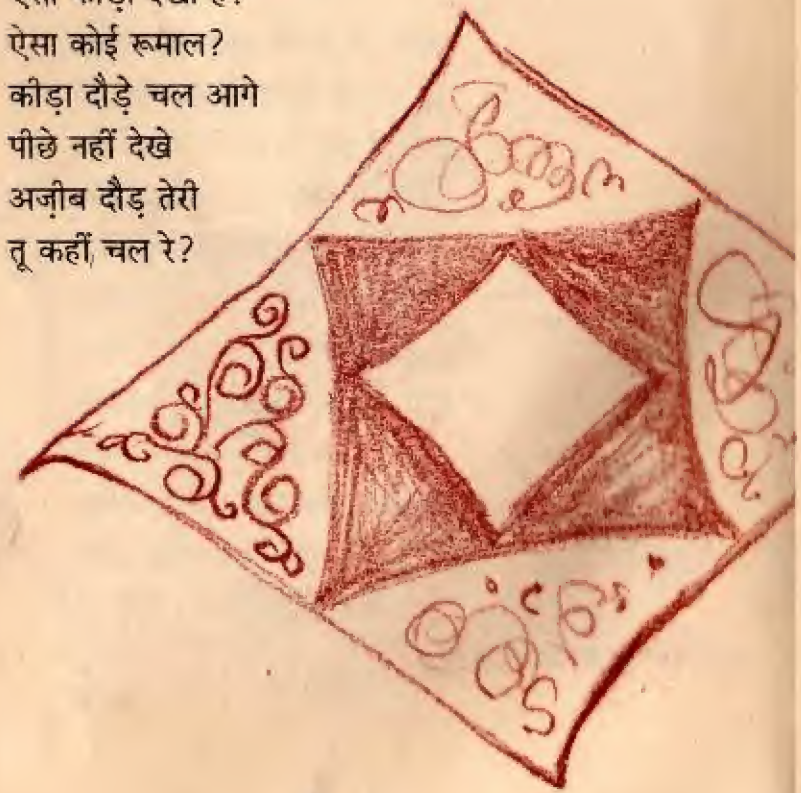

फुग्गे

फुग्गों का लेकर ढेर
देखो, आया है शमशेर
हरे, बैंगनी, लाल, सफेद
रंगों के हैं कितने भेद
कोई लम्बा, कोई गोल
लाओ पैसा, ले लो मोल
मुठठी में लो इनकी डोर
इन्हें घुमाओ चारों ओर
हाथों से दो इन्हें उछाल
लेकिन छूना खूब संभाल
पड़ा किसी के ऊपर ज़ोर
एक जोर का होगा शोर
गुब्बारा फट जायेगा
खेल खत्म हो जायेगा!

मैं हूं बन्दर मस्त कलन्दर
लटक पूँछ से बनूँ सिकन्दर!

॥एक॥

बड़ा मछंदर नटखट बन्दर
छम-छमा-छम नाचता बन्दर

मोटी अकल देह है पतली
दीख रही है हडडी-पसली
फिर भी है चतुर कला कलन्दर।

भरे छलाँगें मारे छकड़ी
टंग जाता है डाल पे मकड़ी
गाल फुलाए देता घुड़की
खा जाता है चट बना चुकन्दर।

भूत भुलैया

नन्हा-सा भूत एक अपने सिर पर,
देखा है मैंने कुछ यूँ सोचकर,
घूम-घूम खोजा जो उस को,
उड़न-पलंग ही दिखा मुझको!

खोई थी खाने में जब कल रात,
ए... एई... ऊ! हुई क्या बात,
झुक-झुक देखा, बार-बार देखा,
बल्ला, क्रिकेट का, वहाँ था रखा!

उछल, कूद करते बालों के अंदर,
हिच्-हिचकियों में भी बस कर,
उफ्... क्यों नहीं उन को भगा मैं पाती,
हूँ जब अब, बड़ी मैं... इतनी!

वन्दना

खोला जूता मैंने लपककर
खिसियाकर जूता जो टटोला
तो इक कीड़ा उस में से बोला
बाहर निकाल उन्हें किया नमस्ते
मैं रोती थी पर वो थे हँसते
फिर उस सर्दी की दोपहर को
भूलभाल कर सैर को
बुड़बुड़ करती घर को आई
बिस्तर पकड़ा ओढ़ी रज़ाई
गहरी नींद आई दोपहर को
और मैं सपने में गई सैर को

सर्दी

सर्दी आई, सर्दी आई
ठंड की पहने वर्दी आई
सबने लादे ढेर से कपड़े
चाहे दुबले चाहे तगड़े
नाक सभी की लाल हो गई
सुकड़ी सबकी चाल हो गई
ठिठुर रहे हैं काँप रहे हैं
दौड़ रहे हैं हाँफ रहे हैं
धूप में दौड़ें तो भी सर्दी
छाँव में बैठें तो भी सर्दी
बिस्तर के अन्दर भी सर्दी
बिस्तर के बाहर भी सर्दी
बाहर सर्दी, घर में सर्दी
पैर में सर्दी, सर में सर्दी
इतनी सर्दी किसने कर दी
अण्डे की जम जाए ज़र्दी
सारे बदन में ठिठुरन भर दी
जाड़ा है मौसम बेदर्दी

सफ़दर हाश्मी

वे मुझे रोकते हैं

वे मुझे रोकते हैं
धूल में नहाने को
जैसे चिड़िया नहाती हैं,
वे हंसने भी नहीं देते
जी खोलकर
जैसे दुनिया के सभी
फूल हंसते हैं।
मुझे समझ में नहीं आता
वे क्या पढ़ाते हैं, उसमें
न नदी होती है न पहाड़
न गीत गाते झरने
मेरी नन्ही सी आंखों मे जो बसा है जंगल, उसमें
किसी भी पेड़ का
एक पत्ता छूकर नहीं देखा है
मेरे शिक्षक ने।
मैं चाहती तो हूं
पढ़ूं पर
शिक्षक मुझे वैसा नहीं पढ़ाते
जैसा मै चाहती हूं।

शुक्ला चौधरी

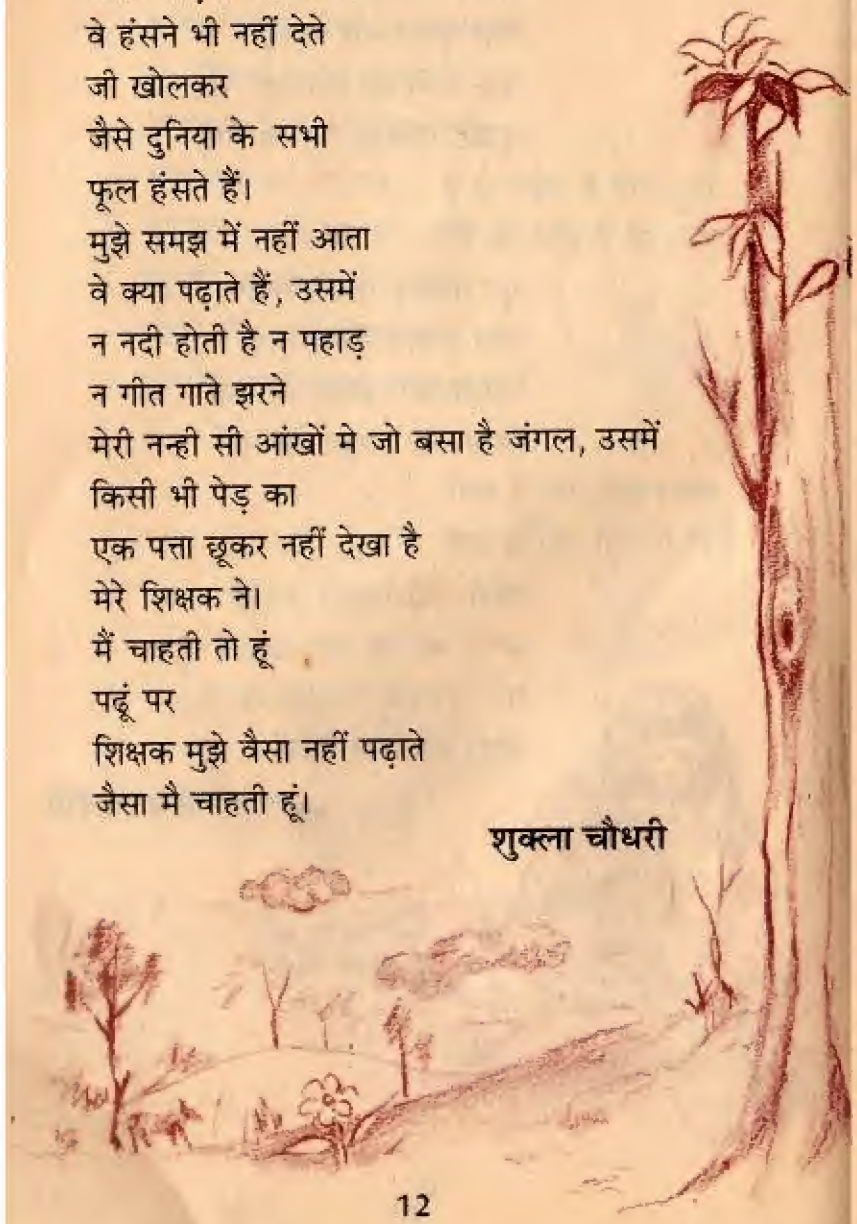

पढ़ाई

एक दो तीन चार
पड़ने लगी मुझको मार,
लगा डर मुझको स्कूल जाने से
होम वर्क नहीं करने से,
इतने में हो गया बीमार
एक दो तीन चार

कोड़ी का कोड़ी

कोड़ी के कोड़ी के
पांच पसेरी के
एक कहानी
गोगा रानी
मुल्ला चोर
खींचे डोर
बाजे पुंगी
नाचे मोर
उड़ गये तीतर
बस गये मोर
बूढ़ी डुकरिया
ले गये चोर
चोरों के घर
खेती भई
खाय डुकरिया
मोटी भई
मन मन पीसे
मन मन खाए
बड़े गुरू से
जूझन जाए
बड़े गुरू की छप्पन छूरी
आंख की अंधी
गांठ की पूरी
एक तीर
फटकारो थो
दिल्ली जाए
पुकारो थो
हो हो हो

पर्यातरण चेतना बाल गीत

आओ करें सफाई बच्चों आओ करें सफाई
यह बस्ती तो वही भाइयों हमने जिसे बसाई
कूड़ा करकट अगर हटेगा तो ही बरकत होगी
वरना खटमल मच्छर होंगे ज्वर की हरकत होगी
स्वच्छ और सुन्दर जन की ही दुनिया करे बड़ाई
आओ करें सफाई

आंगन को बुहार जो कचरा फुटपाथों पर डाले
हवा उठाकर फिर से उनका घर गंदा कर डाले
भैंस नहा पानी से निकली फिर कीचड़ में आई
आओ करें सफाई

ना कपड़ों पर छींटे आते ना दुर्घटना होती
जल भरने पर अगर नलों की बंद टोटियाँ होती
करो किफायत करो हिफाजत जल ही जीवन भाई
आओ करें सफाई

श्रम हिल मिल कर करो न बोलो बातें कड़वी तीखी
वैसे हम सब एक सरीखे धरती एक सरीखी
दीवारें तो सुविधा के ही खातिर हैं बनवाई
आओ करें सफाई

डा. हनुमंत मजूमदार

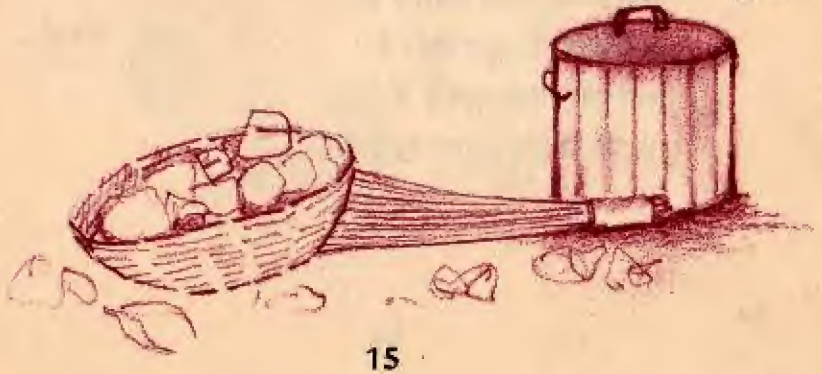

सवाल

बबलू बस करते सवाल हैं।
क्या उत्तर दें, बुरा हाल है॥
बबलू तीन बरस के बच्चे,
मगर अक़्ल के तनिक न कच्चे।
नई चीज़ कोई दिख जाती,
पूछें, कैसे काम है आती?
कौन फूल में गंध भरे जी?
पत्ते कैसे दिखें हरे जी?
मिटटी में सोंधापन क्यों है?
मिरचाँ में तीखापन क्यों है?
मेघा जल बरसाते कैसे?
इन्द्रधनुष दिख जाते कैसे?
सूरज-चाँद कहाँ सुस्ताते?
फिर प्रकाश के फूल खिलाते।
कुदरत का कैसा कमाल है?
क्या उत्तर दें, बुरा हाल है॥
बबलूजी जिज्ञासु बड़े हैं,
मन में अनगिन प्रश्न खड़े हैं।

मामा जी का तार

मामा जी का आया तार
मामी जी हैं बहुत बीमार।
मामा जी हो गये तैयार
जाने का कर लिया विचार।

अरे बुलाता है यह कौन
मामा जी का टेलीफोन।
मामी जी का गया बुखार
बीते जब यों दिन दो चार

पत्र मिला उनको इस बार।
अबके मन को मिटा विचार
उतर गया सब मन का भार।

प्र. मिनाक्षी

चश्मा

दादी जी का चश्मा।
करता नया करिश्मा॥
मनचाहा पढ़ देता।
वरना कुछ गढ़ देता॥
हाथों को मटकाता।
आँखों को भटकाता॥
बालों को उलझाता।
बातों को सुलझाता॥
अक़्सर है खो जाता।
जैसे हो सो जाता॥
लेकिन जब मिल जाता।
आशीषें दिलवाता॥

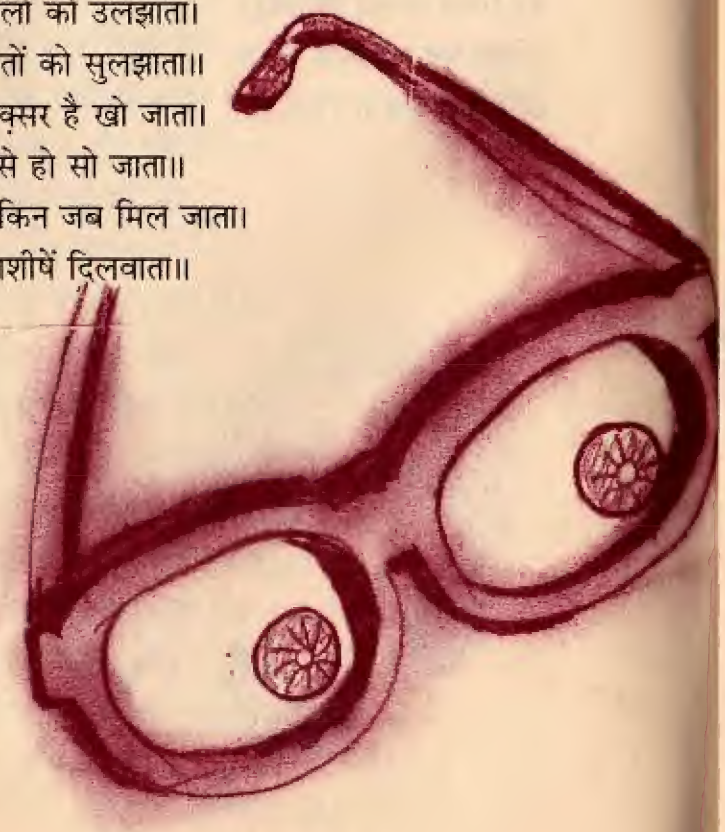

बदूंक

अगर कहीं सिलती बन्दूक
उस को मैं करता दो-टूक,
नली निकाल, बना पिचकारी
रगँ देता यह दुनिया सारी।

स.द.स.

छोटे नाना जी

सुबह हुई लग गए काम में
मेरे छोटे नाना जी
मुझसे बोले-ज़रा फावड़ा
कमरे में से लाना जी-
लगे खोदने फिर वे मिटटी
दो घण्टे तक काम किया
तब फिर पिया उन्होंने
पानी और ज़रा आराम किया।
मेरे छोटे नाना जी
सब कहते हैं दादा जी
यह भी कहते, काम आप ही
करते सबसे ज़्यादा जी।

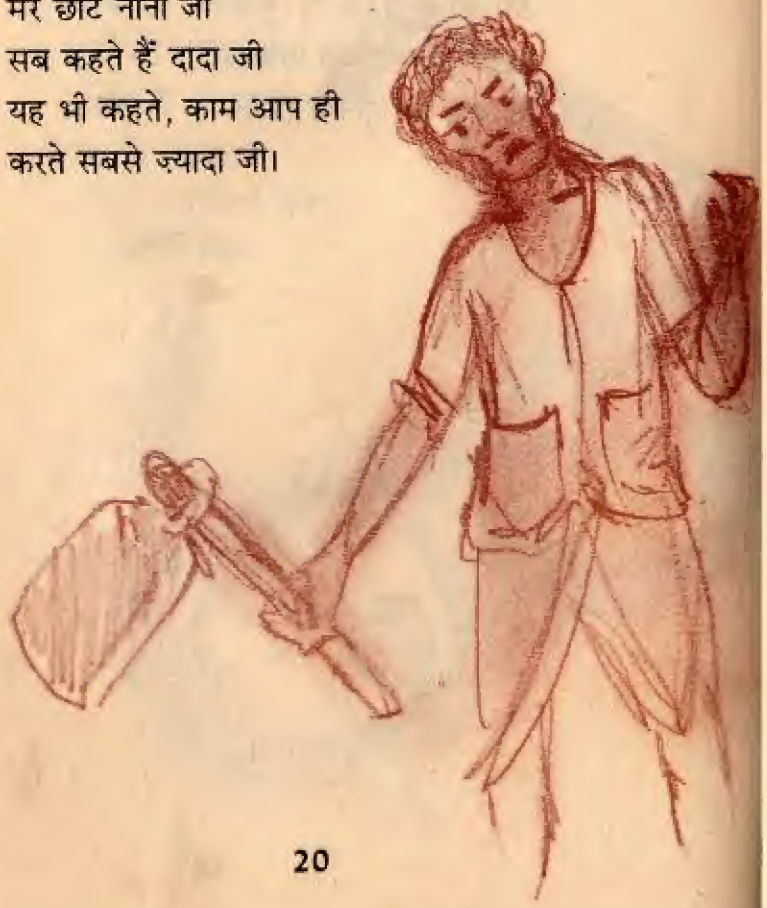

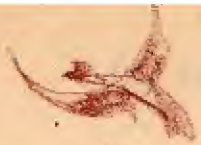

पढ़ाई

बच्चा थक गया
इसलिए उसने अपना
हाथी जैसा बस्ता
कुत्ते की पीठ पर रख दिया
स्कूल तक जाने के लिए
धन्य है आज की पढ़ाई का रस्ता
आठ किलो का बच्चा
और नौ किलो का बस्ता

साहित्या चंदोला

बतूता का जूता

इब्न बतूता पहन के जूता
निकल पड़े तूफ़ान में,
थोड़ी हवा नाक में घुस गयी
घुस गयी थोड़ी कान में।
कभी नाक को, कभी कान को
मलते इब्न बतूता,
इसी बीच में निकल पड़ा
उन के पैरों का जूता।
उड़ते-उड़ते जूता उन का
जा पहुँचा जापान में।
इब्न बतूता खड़े रह गये
मोची की दूकान में।

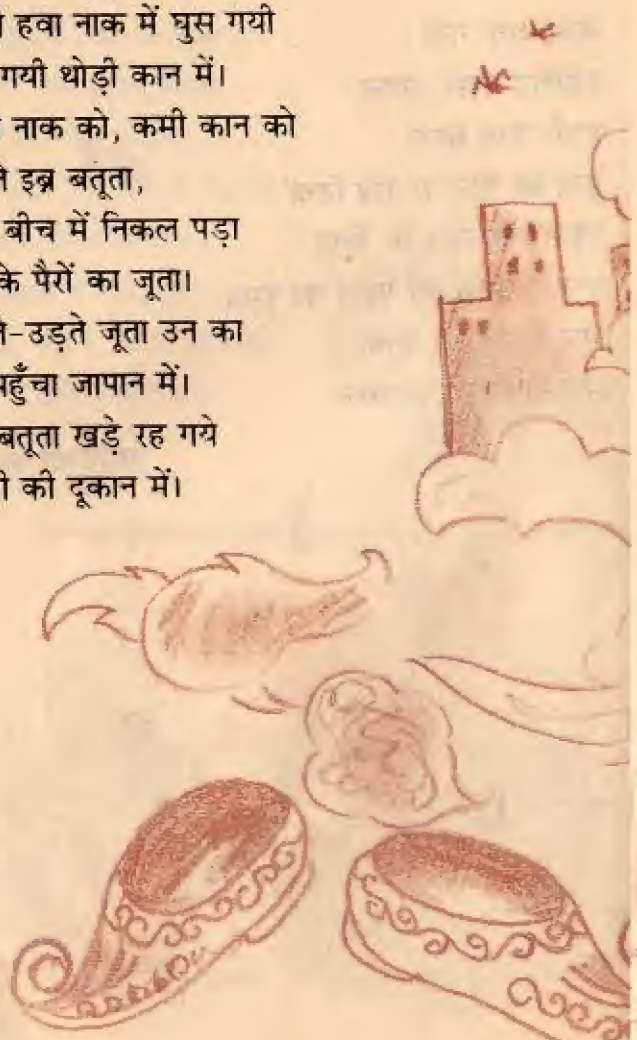

गाँव में मेला

लगा गाँव में मेरे मेला
धमा चौकड़ी
रेलम-पेला!

दूध-जलेबी
चाट-पकौड़ी
खस्ता-खस्ता
सजी कचौड़ी
बेच रहे हैं अनगिन ठेला,
लगा गाँव मे मेरे मेला!

तम्बू-बम्बू
उनमें जोकर
ठिगने-लम्बू
दिखा रहे हैं अपना खेला
लगा गाँव में मेरे मेला!

बन्दर वाले,
भालू वाले
खेल-दिखाते
हैं मतवाले
जिधर देखिए भीड़ का रेला!
लगा गाँव में मेरे मेला!

देख-खिलौने
मन ललचाए
जेबें ख़ाली
ले ना पाए
तरसे सोनू खड़ा अकेला,
लगा गाँव में मेरे मेला!

जादू देखा
झूला झूले
पढ़ने का सब
झँझट भूले
रानी,रिंकू, सन्जू, बेला
लगा गाँव में मेरे मेला!

राम

उलझन उनकी जाती बढ़ती,
नई चीज़ अचरज से भरती।
साथी से, टीचर से पूछें,
माँ-पापा, घर-भर से पूछें।
उल्टे-सीधे प्रश्न अनोखे,
कुछ अटपटे और कुछ चोखे।
अगर सवाल टालना चाहें,
बबलू जी की उलझे राहें।
हर जिज्ञासा शान्त करेंगे,
उन्हें नहीं हम भ्रान्त करेंगे।
उत्तर पा बबलू निहाल हैं।
मन में फिर कोई सवाल है॥

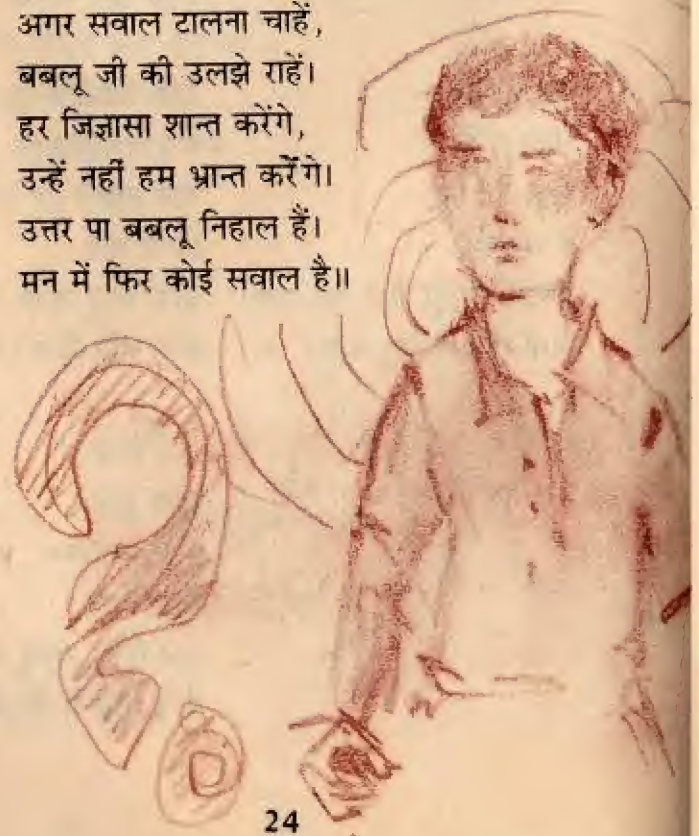

पढ़ाई

कैसी आज पढ़ाई भैया।
लगती जैसे भूल भुलैया।
बच्चा जिससे पार उतरता।
डांवाडोल वही है नैया।
भारी बस्ते के बोझे से।
नाव कर उठी ता-ता-थैया
विषयों की भरमार देखकर
कांप रहा शिक्षक-खेवैया
मिल कर जोर लगाते हैं सब,
करते हैं हैया-हो-हैया
उठती है उलझन की लहरें,
हुए लबालब नदी तलैया

जगदीश चन्द्र शर्मा

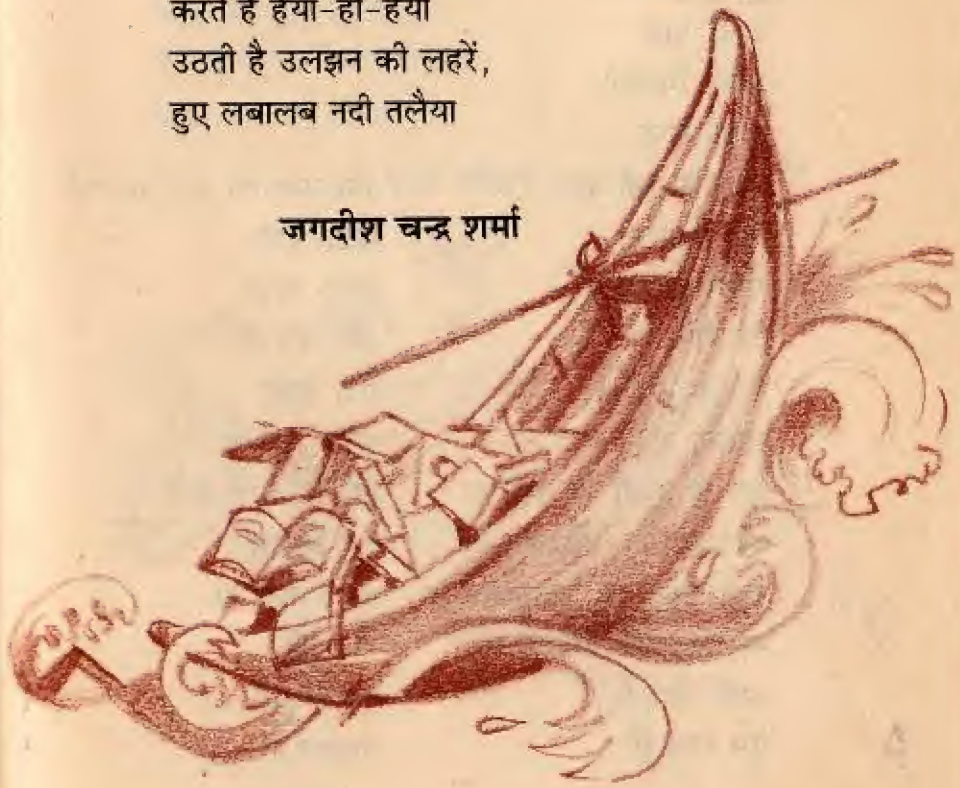

और खेल लो और नाच लो

तुम जो माँ के चँद्र-कुँवर हो
और बाप के हृदय-हार हो
किसी गाँव की
किसी गली के
किसी गेह के
होनहार हो
अभी धूल में
और खेल लो और खेल लो
गुल्ली-डंडा
छुवा-छुवौअल
आती-पाती
आँख-मिचौनी
ऊँचा-नीचा
क्यों कि तुम्हें कल
नहीं मिलेगा
समय खेल का
रोते रोते
मर जाओगे
रामराज में!
तुम जो धरती की गोदी के
और हवा के गीतकार हो
हँसी-खुशी के नवजीवन के
नाट्यकार हो चित्रकार हो
अभी चाव से
प्रेम भाव से
और नाच लो और नाच लो
मोटी-मोटी
ज्वार-बाजरे
और चने की
रोटी खाके
नमक साग के
क्यों कि तुम्हें कल
नहीं मिलेगा
समय नाच का
नंगे भूखे
मर जाओगे
रामराज में!

पढ़ाई

लेकर कापी पेन एक दिन,
भैंस पे जा बैठा छोटू।
हंसा देखकर लेकिन कुछ भी,
समझ नहीं पाया मोटू।
छोटू बोला, क्यों हंसते हो,
क्या मैं पागल दिखता हूँ।
तुम में ही सब अक्ल नहीं है,
मैं भी बुद्धि रखता हूं।
टीचर ने कल यही कहा था,
बहुत मार तुम खाओगे।
यदि तुम एक निबंध भैंसे पर
लिख कर नही दिखाओगे

पूनम चौधरी

हाय रे पढ़ाई

घर में मम्मी कहती
बेटा तू कर ले पढ़ाई
मैं तुझे दूंगी मिठाई
पापा कहते
बेटा तू कर ले पढ़ाई
नहीं तो बरबाद हो जायेगी
मेरी साल भर की कमाई
हाय रे पढ़ाई
हाय रे पढ़ाई

अनिल सोनी,
खड़गदा (डूँगरपुर)

बबलू की परीक्षा

सिर पर आ गई परीक्षा
तो खिसक गई
बबलू के पाँवों तले की जमीन
सोचने लगा वह
करने लगा दूर तक की चिंता।
बबलू ने जमकर पालथी लगाई
और सामने बिखेर दीं
उसने अपनी सारी पोथियाँ

अबकी पढ़ने की
ठान ली सो ठान ही ली
सब बातें छोड़ दीं
कमर पहले कुछ ढीली थी
अबकी कसकर बाँध दी।

बबलू ने सिर खुजलाया
आँखें मसलीं
पलटे पोथियों के पन्ने
कई बार पलटी पालथी,
तब तक लगनी ही थी प्यास
रीस भी आनी ही थी
सब कुछ हुआ
बबलू ने पढ़ना शुरू किया।
अकेला था बबलू
पर समस्याएँ कई थीं
एक तो निकम्मी नींद थी
बबलू तो नहीं बुलाता था
पर बुलाती थीं आँखें,
झपकियाँ लेने लगा बबलू
और आ गए कुछ दोस्त
चुप रहे वे सब
रोकते रहे अपनी हँसी।
पर तभी अचानक
फूट पड़ा हँसी का फव्वारा
नींद से जागा, हड़बड़ाया
सिर खुजलाता बबलू बोला
सिर पर थी परीक्षा,
अब जाने कहाँ चली गई।

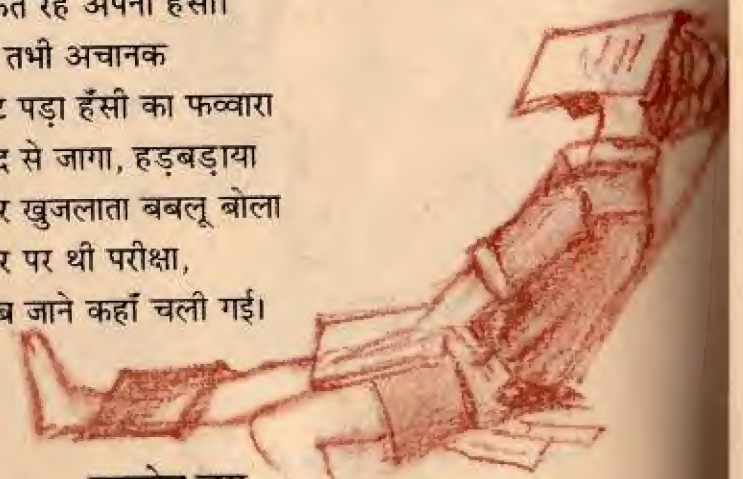

सत्यदेव चूरा

मनतरसे

मन तरसे भाई मन तरसे
बाल मेला जाने को मन तरसे
मन तरसे भाई मन तरसे
चित्र बनाने को मन तरसे
मन तरसे भाई मन तरसे
कठपुतली बनाने को मन तरसे
मन तरसे भाई मन तरसे
खेल खेलने को मन तरसे

गोपाल पटेल

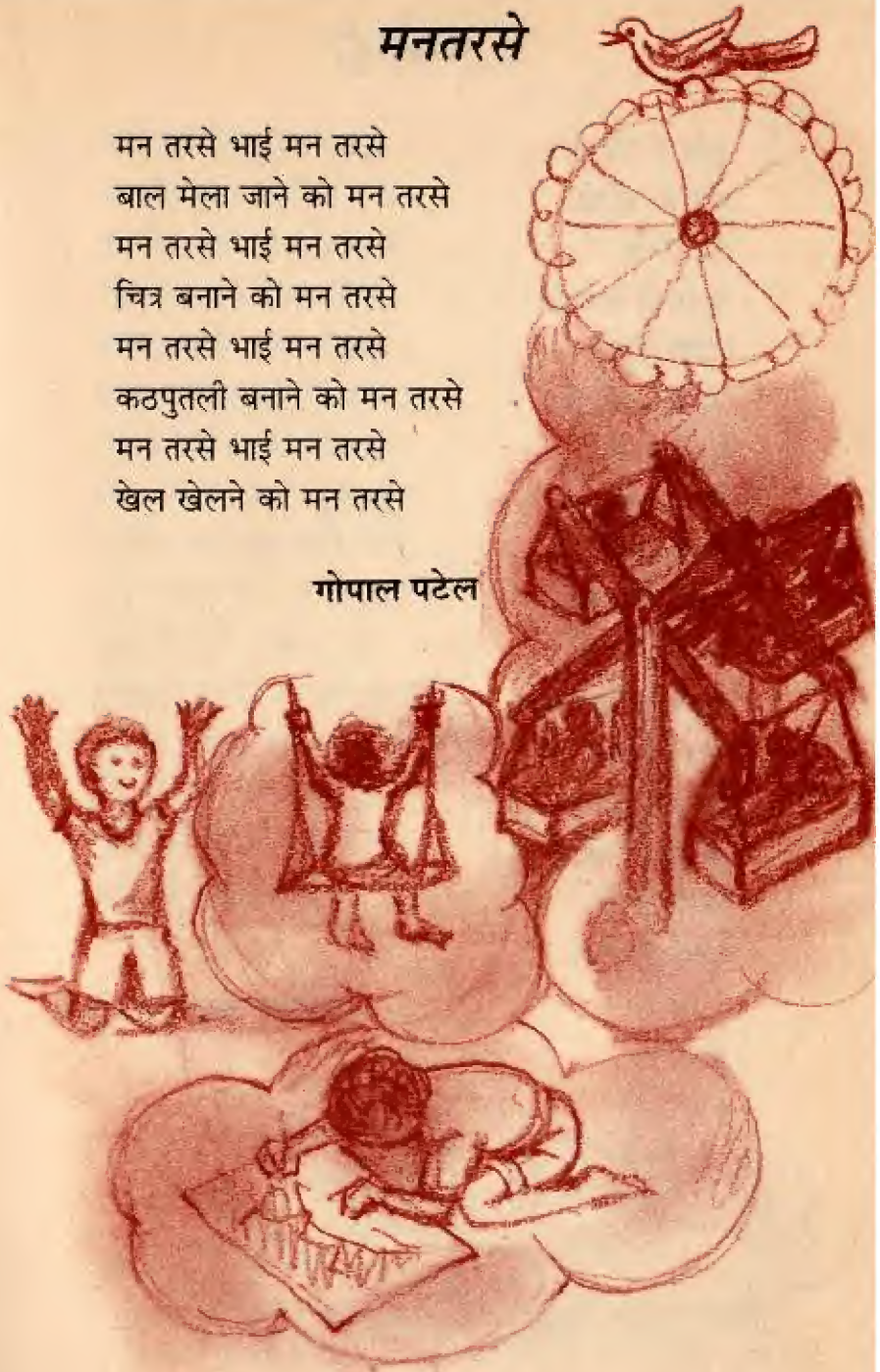

पकौड़ी

हाथ से उछली
मुँह में पहुँची,
पेट में जा
घबरायी पकौड़ी।
दौड़ी-दौड़ी
आयी पकौड़ी।
मेरे मन को
भायी पकौड़ी।
दौड़ी-दौड़ी
आयी पकौड़ी।

छुन-छुन छुन-छुन
तेल में नाची,
प्लेट में आ
शरमायी पकौड़ी।
दौड़ी-दौड़ी
आयी पकौड़ी

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

होली

एक पेड जब हुआ पुराना
ना कोई फूल ना कोई पत्ता
ना कोई पंछी ना कोई गाना
एक पेड़ जब हुआ पुराना
'होली आयी' बच्चे बोले
दिय घबराया पेड़ ना डोले
आयी करीब मौत और भी
गिर गये पत्ते बचे खुचे भी
लेकिन जब सब बच्चे आयें
वन उपवन के गीत सुनाये
एक ही टूटी सूखी डाली
कुरइडी की ही हो गयी होली
वनभोज हुआ और चले गये बच्चे
पेड़ ने झुक कर देखा नीचे
पाँव तड के जो देखा उसने
छोटे चार पौधे नन्हे!

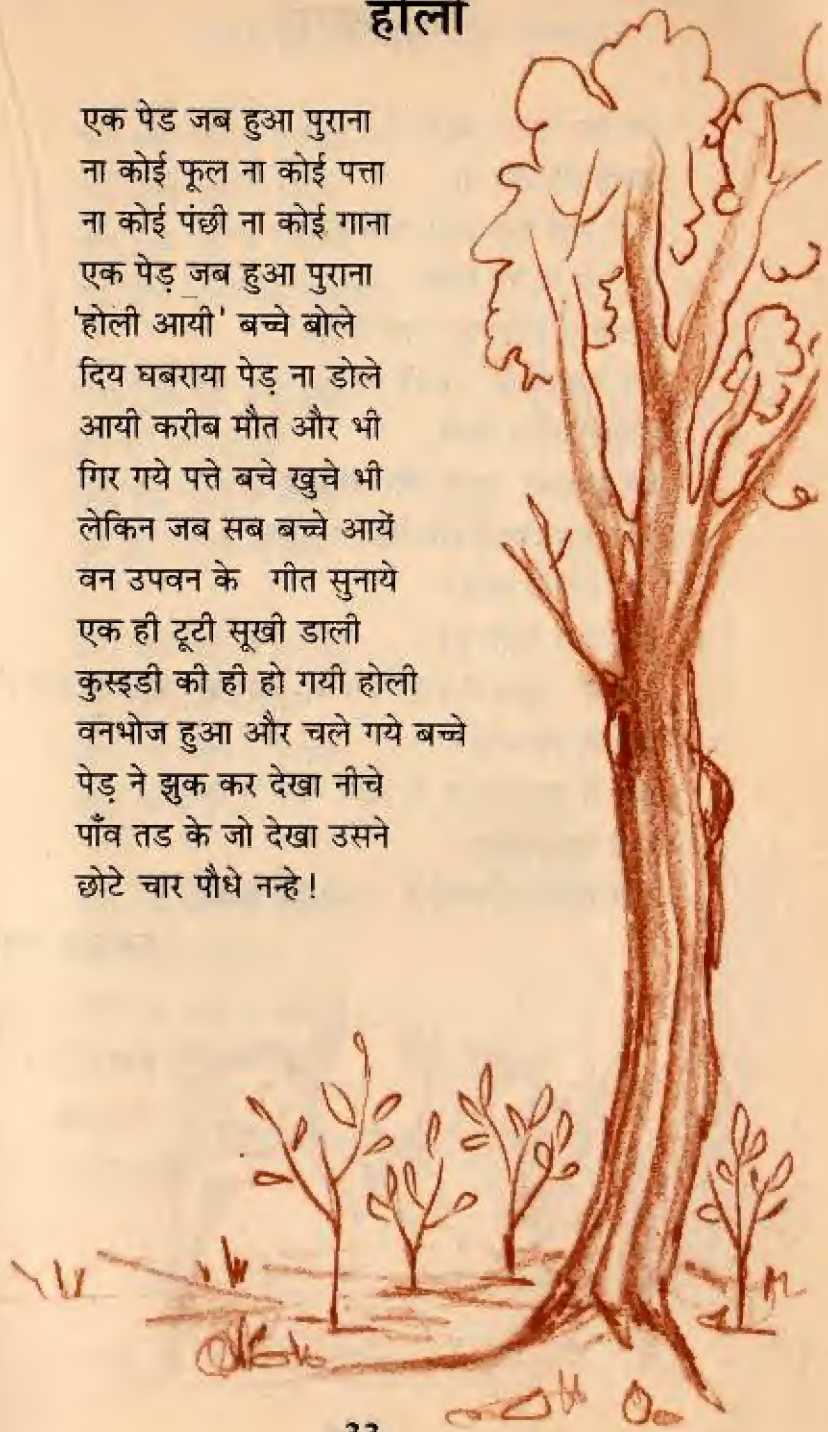

विदाई

एक दिन हमारे स्कूल में,
विदाई समारोह पर,
ए.डी.आई.एस. महोदय पधारे,
डट कर भोजन किया,
केवल एक गिलास पानी पिया।
बड़े गुरूजी के कहने पर,
भाषण आंरभ किया,
मेरे शिक्षको, बच्चो और बच्चियो,
आज इस विदाई समारोह पर आकर
और मिठाई खाकर
मुझे बड़ी खुशी हुई।
आपके स्कूल में इस प्रकार के कार्यक्रम प्रतिदिन होते रहें
यही शुभकामना है।
अंत में एक लड़के से बोले, बेटा पंचमपुरी,
जर्दा खिलवाइए।
और जिनकी विदाई है, उनसे मिलवाइए।

एम.एस. खान

क्या हक नहीं है हमको

क्या हक नहीं है हमको,
हम बोलें अपनी भाषा।
क्या हक नहीं है हमको,
पूरी करें अपनी अभिलाषा॥

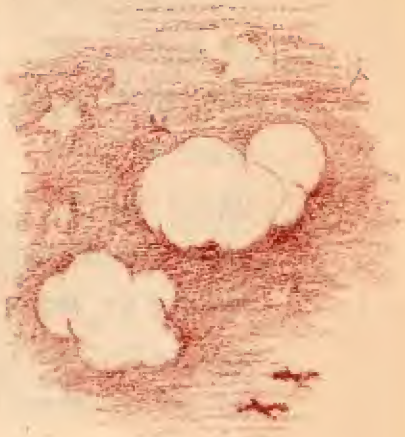

क्या हक नहीं है हमको,
हम हों आफ़ताब।
क्या हक नहीं है हमको,
पूरे करें अपने ख्वाब॥

क्या हक नहीं है हमको,
हम रहें सदा मासूम।
क्या हक नहीं है हमको,
गायें झूम-झूम॥

क्या हक नहीं है हमको,
हम ताकें आसमां।
क्यों हक नहीं है हमको?
पूरे करें ये अरमां॥

शालिनी चौधरी

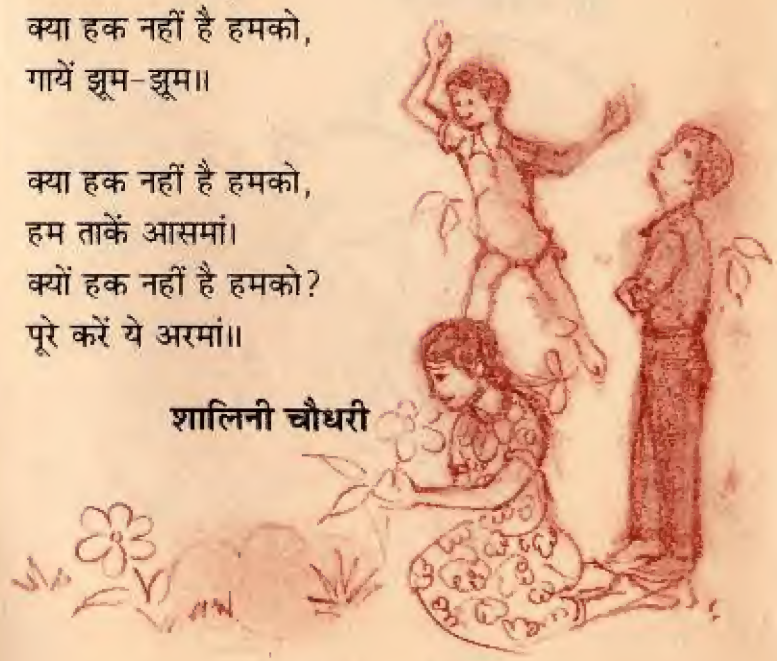

पीपल

हवा के इस झोकों से
सर सराते मेरे पत्ते
मानो तालियाँ बजाने
पंछियों को बुलाने
मेरे पत्ते नोकदार
लुभावनी उनकी चमकार
लोग करें मेरा सम्मान
मुझे बनाते पूजास्थान
मेरी छाँव मे ध्यानस्थ
बने बोधिसत्व
अब तो मैं भी हूँ बूढ़ा
मुझे सबका ममत्व

दूर भगाओ!

अरे मूर्ख घरेलू मक्खी! चल हट तेरा यहाँ क्या काम?
क्यों मंडराती आसपास ही सच में गंदा तेरा नाम?
तू बसती है कूड़े कचरे में, मैली और गंदी जगहों में,
अपने साथ कीटाणु लाती, फैलाती तू भोजन पानी में।

तू संग लाती दस्त रोग, लाती हैजा और मियादी बुखार
इससे तू गंदी कहलाती, सचमूच तेरा बुरा व्यवहार
तेरे संग आने वाले जीवाणु गंदे रोग फैलाते हैं,
ढककर अपना भोजन-पानी, हम दूर उन्हें भगाते हैं।

सैवाल

हरा हरा गलीचा
आओ तशरीफ रखो
पर हाँ! जरा सँभलके
इसपर पाँव रखो
इसपर रखा पाँव तो
फिसल गया पाँव
कमर टूट गयी तो
किया घूमजाव
जमींपर फैल जाता
ये है मनमाना
पानी पर तैरता
ये है मनमौजी
दीवार पर छा गई
ये कैसी काई
छाल पकड़े पेड़ों की
इसका जवाब नहीं
थोड़ा सलैस भदा
दिल का है ये खुदा
मगर रखोगे पाँव इस पर
होगी ऐसी दुर्गत
फिर से ना होगी हिम्मत

धम्मक धम

धम्मक धम भई धम्मक धम
छोटे छोटे बच्चे हम
लड़की, न लड़के से कम
धम्मक धम भई धम्मक धम

कमला भसीन

कागज़ की नाव

बाहर
कागज मोड़कर
एक लड़की बना रही, कागज़ की नाव।
पोखर में
तैरा रही है लड़की, कागज़ की नाव।
नाव,
तैर रही है पानी पर
और लड़की ताली बजा-बजा हंस रही है।
आज मैं
इस नाव पर बैठकर जाऊँगी,
उस पार मम्मी, पापा के साथ
मेले में!
अचानक
मेघ गरजा
लड़की ने घबराकर इधर-उधर देखा
ओले और बरसात
लड़की चिल्लाई,
उफ़! बचाओ
डूबी जा रही है!
मेरी कागज़ की नाव।

डॉ अर्चना चतुर्वेदी

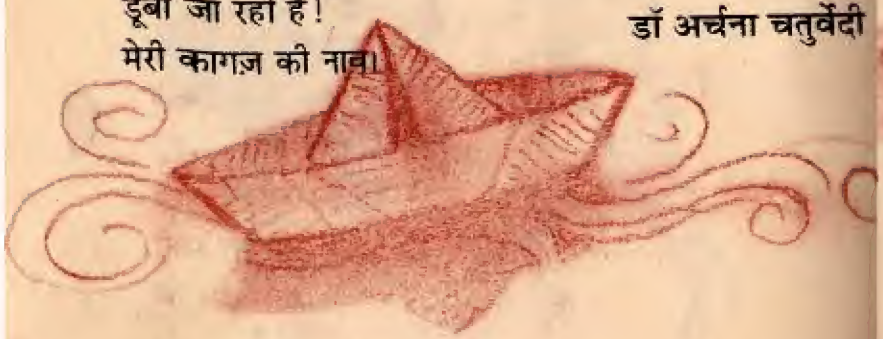

गोल-मटोल चन्दा

समीरा, समीना, आबू और मैं
गए थे जंगल में घूमने इक रात
बरगद पर नन्हा-सा, नया चांद, लगा
समीरा, समीना, आबू और मेरे हाथ!
समीरा ले आई नए चांद को घर,
खिलाने उसे दूध के बिस्कुट और मिठाई।
आबू ने करी पूजा वरदान के लिए,
समीना उसके लिए रोटी ले आई।
पर चन्दा को तो जीने-बढ़ने के लिए,
चाहिए थे रात-दिन करोड़ों तारे।
चिड़िया चाहती कीड़े, तुम्हारी बहन चाहती दूध,
मैं चाहूँ तारे, कहा चांद ने, बेचारे!
समीरा, समीना, आबू और मैंने,
कूद कर आकाश में रख दिया चन्दा।
समीरा, समीना, आबू और मैंने
कहा, अलविदा, गोल-मटोल होकर आना चन्दा!

गीता धर्मराजन

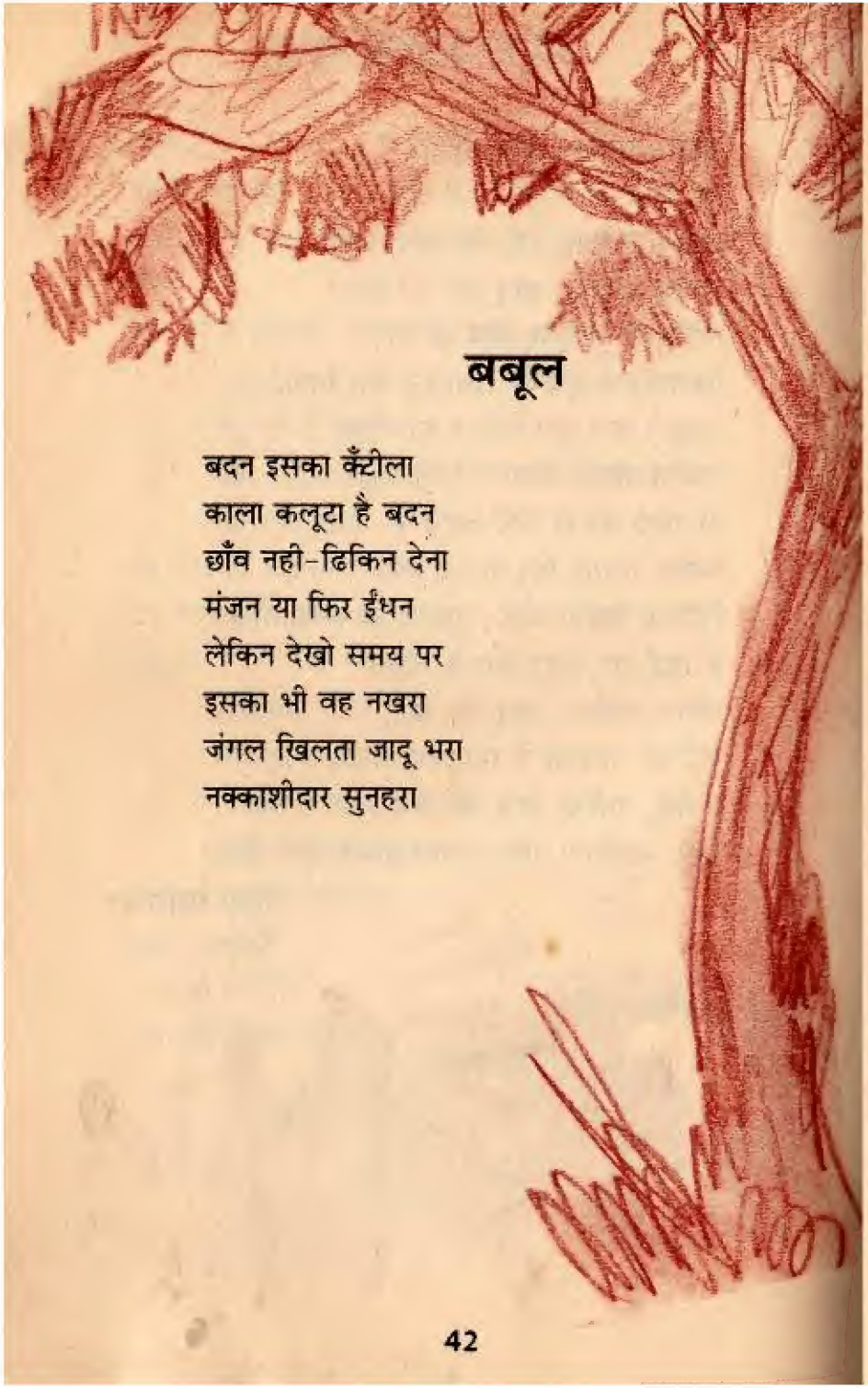

बबूल

बदन इसका कँटीला
काला कलूटा है बदन
छाँव नहीं-ढिकिन देना
मंजन या फिर ईंधन
लेकिन देखो समय पर
इसका भी वह नखरा
जंगल खिलता जादू भरा
नक्काशीदार सुनहरा

दावत

चूहा लाया- चावल, चीनी
बिल्ली लाई आटा
हरी सब्जियाँ तोता लाया
धोकर उनको काटा
मुरगी पूरा मटका भरकर
दूध कहीं से लाई
आग जलाकर, मीठी-मीठी
सबने खीर पकाई
पूड़ी बनी, बनी तरकारी
सबने मिलजुल खाया
कामचोर कौवे का मन भी
देख-देख ललचाया।

वटवृक्ष

बड़ी माँ, बड़ी माँ के
लंबे लंबे बाल
पहने हरा घघरा
उस पर मण्टी लाल
लंबे लंबे बाल उसके
झूलायेंगे झूले
माँ देखेगी नन्हों को
खेले मेरे लाड़ले
बड़ी माँ का बड़ा पेट
सबका है सहारा
लेकिन इसको रखो दूर
इससे घर को खतरा

बिल्ली को जुक़ाम

बिल्ली बोली, बड़ी जोर का
मुझको हुआ जुक़ाम
चूहे चाचा, चूरन दे दो
जल्दी हो आराम
चूहा बोला बतलाता हूँ
एक दवा बेजोड़
अब आगे से चूहे खाना
बिल्कुल ही दो छोड़।

नारियल

सागर तीर पर यह खड़ा
एक पगला नंगा
इसके नहीं हाथ पाँव
झूला बाँधूं कहाँ
लंबी इसकी गर्दन
दृष्टि सागार पार है
सिर में इसके खोंसा
हरे परों का पंखा है
दिखने में हो पगला
फिर भी गुण अपार है
इसके बदन का हर हिस्सा
अपने काम में आता है

मेरा गाँव

एक छोटा सा गाँव
जिसमें पीपल की छाँव
उस गाँव में एक
छोटा सा घर
छोड़ कर उस गाँव को
शहर का हो गया।
भीड़ में खो गया।

तोता बोला

चिड़िया चीं
कौवा काँव
तोता बोला-चल मेरे गाँव
तोते तेरा घर किधर
सूरज उगता है जिधर
सूरज उगता है किधर
पूरब-पश्चिम
उसके ठाँव
तोता बोला-
चल मेरे गाँव!

डा. चन्द्र कुमार बरठे

गिलहरी

छोटी सी प्यारी सी है ये गिलहरी
नाचती फुदकती है ये गिलहरी
फुदक-फुदक कर पेड़ पे है चढ़ती
कुतर-कुतर कर बेर ये खाती
न जाने हमसे वो क्यों शरमाती
तुमको है भाती ये मुझको भी भाती
पर ये हमारे हाथ न आती

नागफनी(निपडुंग)

जहाँ न हो बारिश
जहाँ नहीं नदिया
जहाँ नहीं पानी
जो है मरूभूमि
बाँधो तुम घर मेरा वहीं
धूप में या छाँव में
वहाँ रहूँगा मैं
चैन से रहूँगा मैं
अगर दृष्टि है सुंदर, तो
सुंदर ही लगूँगा मैं
मेरे फूल देखे हैं?
अनोखे ही रूप के
तुम्हें नहीं मालूम
मेरे और भी (कितने) गुण हैं
सूरज मेरा भाई
उसका मुझे गर्व नहीं
मेरे बदन पर
धूप के काँटे सही

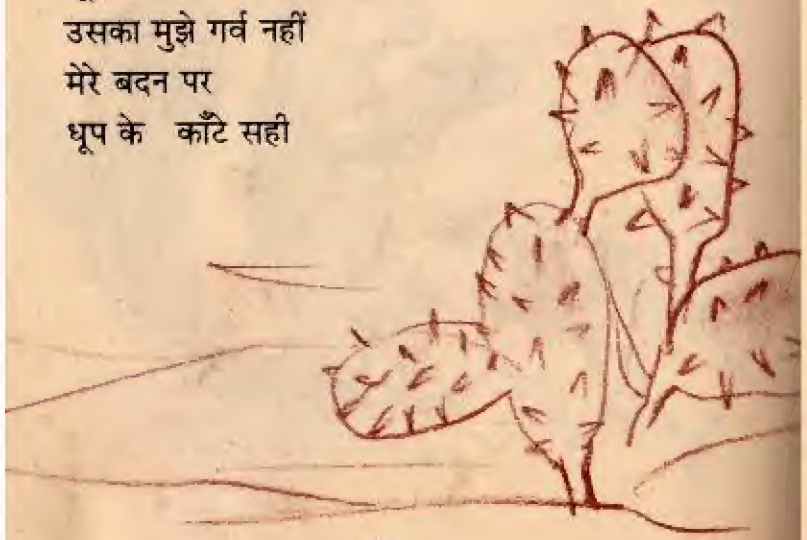

बैलगाड़ी

यह बैलों की गाड़ी देखो,
पहिये सबसे भारी
भइया हांक रहा है तिक-तिक,
जीजी करे सवारी
इसमें भूसा चारा लादें,
गेहूँ भर-भर लावें
भइया कूदे, जीजी पकड़े,
दोनों ऊधम मचावें
यह बैलों की सदा सहेली,
है किसानों को प्यारी
गाँव-गाँव में घूम रही है,
यह बैलों की गाड़ी!

कोण

कोण एक छड़ी छड़ी
अकेली खड़ी खड़ी
मिली सहेली तभी
हुआ एक कोण
एक और आयी वहीं
शोर मचाती हुई
बाँधी तीनों की तिकटी
मट को तिकटी पर
चौराहे पर मिले चार
बनी चौखट खिड़की द्वार
बसा दिया घरबार
बैठो खटिया पर
पंचकड़ी की पंचायत
उनकी चले मसल हल
दूर रखा छठे को
जिसका चले ज़ोर
छद आयी सखियाँ
बड़ी उधभी सखियाँ
अंदर एक मीठा राज़
मधभारवीका घर

मोटर रिक्शा

भड़-भड़ भागा मोटर रिक्शा,
ठहरो-ठहरो जीजी कहती,
भैया हाथ हिलाता
ब्रेक लगाता रिक्शे वाला,
पहिये चीं-चीं गाते
भैया, जीजी दौड़े-दौड़े,
चढ़ रिक्शा में जाते
इंजन को पेट्रोल चटाया,
इंजन भड़का दौड़ा
लोहा लंगड़ जोड़-जोड़ कर,
खूब बनाया घोड़ा!

रामचन्द्र तिवारी

अपने पिता को मनवाना

आज सवारी मुझे बना लो
मैं भी देखूँगा शहर,
किस तरह मोड़ते रिक्शा,
घंटी बजाकर किडिंग-किडिंग भीड़ में
कैसे रिक्शा चलता,
आज सवारी मुझे मान लो
पूरे दूँगा पैसे,
न होगा भाव-ताव
देखूँगा मैं पसीना,
मेरे पास है अठन्नी
जीते हैं जो कंचे में,
लो, शहर घुमा दो आज
मुझी से कर लो बोहनी,
मैं भी देखूँगा शहर
माँ कहती है आज - कल
मैं बड़ा हो गया हूँ, अब तो
सवारी मुझे बना लो

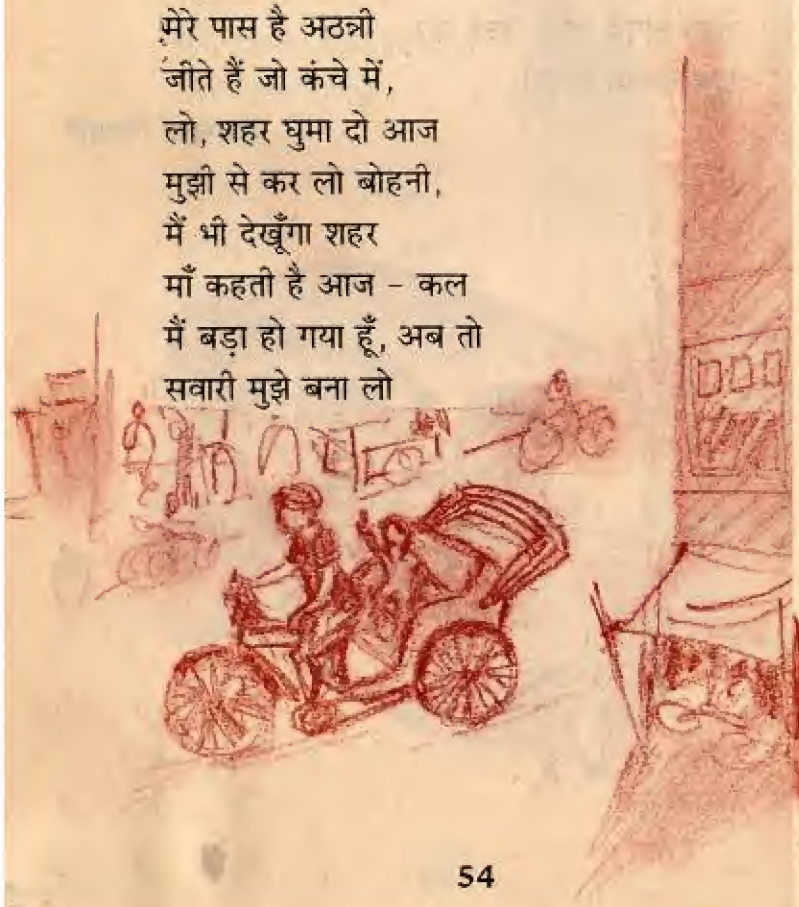

पहन घाघरा ओढ़ ओढ़नी

पहन घाघरा ओढ़ ओढ़नी
बिल्ली मौसी आई
घड़ी हाथ में कान में झुमका
बिन्दिया खूब सजाई
खरगोश बैठा रसोईघर में
तले समोसे
लोमड़ी खाती जाए उनको
और परोसे
चूहा बैठा खिड़की में
करे सिलाई
मुर्गा अपने सारे घर की
करे सफाई

हरीश कुमार डोडियार

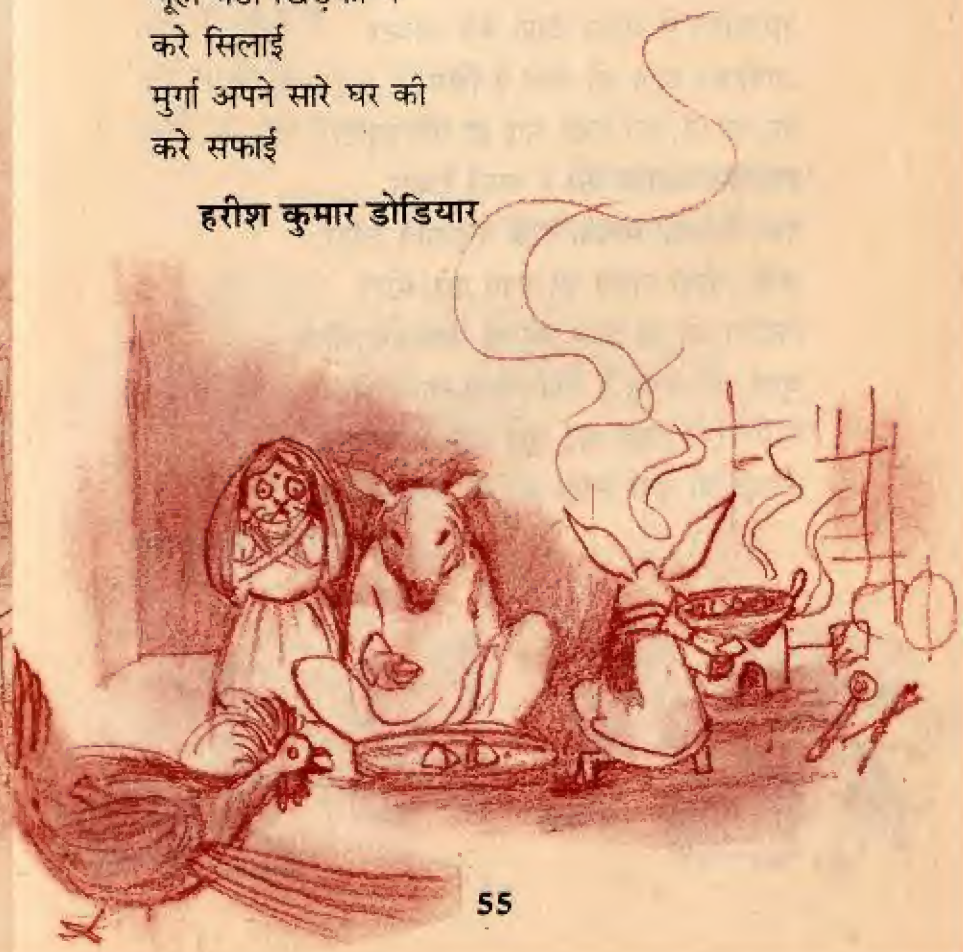

सब जगह हो रही टर्र टर्र

देखो रे भाई सब जगह हो रही टर्र टर्र.....
आसमान में चालै देखो हैलीकाप्टर
बिजली की गैरहाजरी में चालै जनरेटर.....
सब्जी मंडी में देखो भाई बिक रहै मटर
विटामिन की करे पूर्ती खावे टमाटर.....
बाप देखो बेटी से बोले है डॉटर
भाई भी बहना से बोले माई सिस्टर.....
जिलाधीश परिसर में देखो बैठे कलेक्टर
गाड़ी में टिकिट जांचता डोले कन्डेक्टर.....
अस्पताल में जाकर देखो बैठे डॉक्टर
आपरैशन हाल को बोले है थियेटर.....
घर-घर में अब देखो भाई हो गये स्कूटर
हल बैल आराम करै है चालै ट्रैक्टर.....
दूध, तेल को मापक देखो कहलावे लीटर
लंबो-चौड़ो नापबे को काम करे मीटर.....
फिटिंग को जो काम करै वो कहलावे फीटर
चूल्हे की जगह पै देखो चाल रह्यो हीटर.....
सिगरेटों में देखो भाई चल रही है फिल्टर
गोपाल भी कुछ लिख कर बन रह्यो राइटर...

गोपाललाल राणवा

मम्मी को जब गुस्सा आता

मम्मी को जब गुस्सा आता
मार हमें खूब पड़ती
मार जो पड़ती हमको,
रोना खूब है आता
इससे मम्मी का गुस्सा बढ़ जाता
रोना हमारा हल्ला मचा देता
हंगामा पूरे घर में हो जाता
आते सब दौड़-दौड़कर
कोई मेरे साथ तो
कोई मम्मी के साथ हो जाता
मम्मी को जब गुस्सा आता।

निशान्त उपाध्याय,
तीसरी कक्षा, नई दिल्ली

लोक रंग

ताता तपेली,
मामो लावे जलेबी,
जलेबी तो कासी,
मामा ने वऊ नासी
नासे तो नासवा दो,
घड़ो पाणी लावा दो,
घड़ो मेल्यो ओटले,
वींसू सोट्यो सोटले

2

आवरे बरसात
देवरीयो बरसात
ऊनी ऊनी रोटली
कारेला नू साक

3

उनारा ना दाडा में तो
आम्बा आब्बा वारा है
कैरीये खाइने हारा रांगड़ा
मस्त रैवा वारा है
गाम ना तो ठाठ निराला है।
बारे मईना तेवार ना दाडा है।

सरोज पाठक

तलवारें चलीं

.....तलवारें चलीं,
लाठियां चलीं, चली फिर से गोली,
आज भारत में फिर से,
खेली गई खून से होली
किसी ने तोड़े मन्दिर
किसी ने तोड़ी मस्जिद
इनको तोड़ने से हुई लड़ाई
इसे कैसे मिटाओगे मेरे भाई.....

कालूराम जैन,

(सड़क पर रहने वाले बच्चे द्वारा लिखी गई कविता)

यह बच्चा किसका बच्चा है

यह बच्चा कैसा बच्चा है
यह बच्चा काला काला-सा
यह काला-सा मटियाला-सा
यह बच्चा भूखा भूखा-सा
यह बच्चा सूखा सूखा-सा
यह बच्चा किसका बच्चा है
यह बच्चा कैसा बच्चा है
जो रेत पर तनहा बैठा है
ना इसके पेट में रोटी है
ना इसके तन पर कपड़ा है
ना इसके सिर पर टोपी है
ना इसके पैर में जूता है
ना इसके पास खिलौनों में
कोई भालू है, कोई घोड़ा है
ना इसका जी बहलाने को
कोई लोरी है, कोई झूला है
ना इसके जेब में धेला है
ना इसके हाथ में पैसा है
ना इसके अम्मी - अब्बू हैं
ना इसके आपा - खाला हैं
यह सारे जग में तनहा है यह बच्चा कैसा बच्चा है
यह बच्चा कैसा बैठा है
यह बच्चा कब से बैठा है
यह बच्चा क्या कुछ पूछता है
यह बच्चा क्या कुछ कहता है
यह दुनिया कैसी दुनिया है

यह दुनिया किसकी दुनिया है
इस दुनिया कुछ टुकड़ों में
कहीं फूल खिले कहीं सब्ज़ा है
कहीं बादल घिर - घिर आते हैं
कहीं चश्मा है, कहीं दरिया है
कहीं ऊंचे महल अटरिया हैं
कहीं महफ़िल है, कहीं मेला है
कहीं कपड़ों के बाज़ार सजे

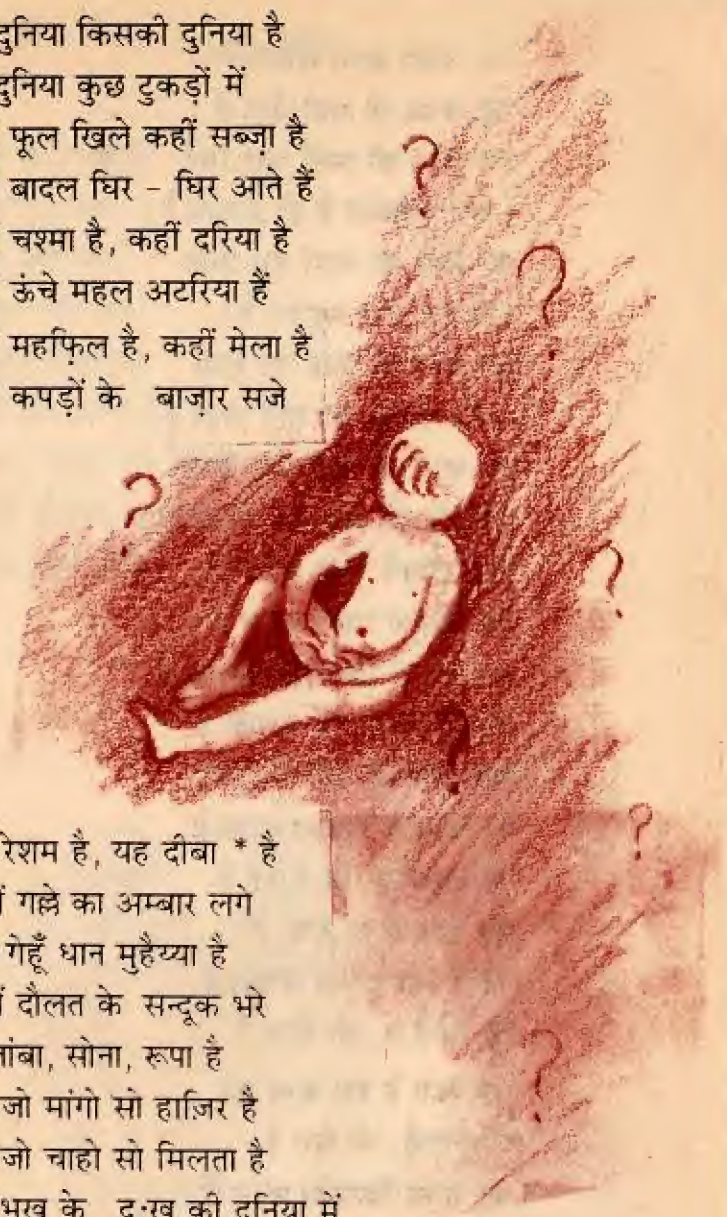

यह रेशम है, यह दीबा * है
कहीं गल्ले का अम्बार लगे
सब गेहूँ धान मुहैय्या है
कहीं दौलत के सन्दूक भरे
हाँ तांबा, सोना, रूपा है
तुम जो मांगो सो हाज़िर है
तुम जो चाहो सो मिलता है
इस भूख के दु:ख की दुनिया में
यह कैसा सुख का सपना है
वो किस धरती के टुकड़े हैं
यह किस दुनिया का हिस्सा है?

यह तनहा बच्चा बेचारा
यह बच्चा जो यहां बैठा है
इस बच्चे की कहीं भूख मिटे
(क्या मुश्किल है हो सकता है)
इस बच्चे को कहीं दूध मिले
(हाँ दूध यहां बहुतेरा है)
इस बच्चे का कोई तन ढाके
(क्या कपड़ों का यहां तोड़ा है)
इस बच्चे को कोई गोद में ले
(इन्सान जो अब तक ज़िन्दा है)
फिर देखिये कैसा बच्चा है
यह कितना प्यारा बच्चा है
इस जग में सब कुछ रब का है
जो रब का है, वो सबका है
सब अपने हैं कोई गैर नहीं
हर चीज़ में सबका साझा है
जो बढ़ता है, जो उगता है
वह दाना है या मेवा है
जो कपड़ा है, जो कंबल है
जो चाँदी है, जो सोना है
वह सारा है इस बच्चे का
जो तेरा है, जो मेरा है
यह बच्चा किसका बच्चा है?
यह बच्चा सबका बच्चा है।

इब्ने इंशा

बा-बा

बा-बा भेड़ कलूटी
ऊन है भाई ऊन,
हाँ-हाँ भाई जान
थैले भर-भर तीन।
एक मुन्ना राजा का।
पर जो रोता गली में
उस के लिए नहीं है एक भी।
दंड यह शैतानी का।
दंड यह शैतानी का।

स. द. स

हाय रे पढ़ाई

हाय रे पढ़ाई
हाय रे पढ़ाई
न जाने कहां से आई
क्या पता किसने बनाई
मास्टर जी कहते
बेटा तू कर ले पढ़ाई
नहीं तो करूंगा पिटाई

ऐसा क्या हो सकता है

ऐसा क्यों नहीं हो सकता?
खिड़की से झांकी रे मुनिया
हाय रे ! मेरी छोटी दुनिया
दुनिया कैसी उबड़-खाबड़

टीचर करती बड़-बड़-बड़-बड़
ना तो खेले, ना तो गाए
साथ में ना तू ताल मिलाए
दांत पीसकर तू चिल्लाए

पढ़ाना था तो ऐसे पढ़ाती
गीत कहानी ढेर सुनाती
मेरे नाम पर ताली बजाती
तब अगर वो मुझे डांटती
तो मैं बुरा कभी न मानती
थोड़ा रोकर मैं मान जाती

चूरन वाला क्लास में आता
घंटी बजाता धूम मचाता
हम भी उसके संग हो जाते
चूरन चाटते, धूम मचाते।

ई बुढ़ऊ

ई बुढ़ऊ गाये चले 'एक'
सींपो-सींपो गधा दिया रेंक
गधे की सवारी, ढेंचू-ढेंचू, बुढ़ऊ को भाये
ई बुढ़ऊ आये टाँग तोड़ाये।

ई बुढ़ऊ गाये चले 'दो'
सींपो-सींपो गधा गया खो
गधे की सवारी ढेंचू-ढेंचू, बुढ़ऊ को भाये
ई बुढ़ऊ आये टाँग तोड़ाये।

ई बुढ़ऊ गाये चले 'तीन'
सींपो-सींपो गधा गया खो
गधे की सवारी ढेंचू-ढेंचू, बुढ़ऊ को भाये
ई बुढ़ऊ आये टाँग तोड़ाये।

ई बुढ़ऊ गाये चले 'चार'
सींपो-सींपो गधा गया खो
गधे की सवारी ढेंचू-ढेंचू, बुढ़ऊ को भाये
ई बुढ़ऊ आये टाँग तोड़ाये।

ई बुढ़ऊ गाये चले 'पाँच'
सींपो-सींपो गधा गया खो
गधे की सवारी ढेंचू-ढेंचू, बुढ़ऊ को भाये
ई बुढ़ऊ आये टाँग तोड़ाये।

ई बुढ़ऊ गाये चले 'छै'
सींपो-सींपो गधा गया खो
गधे की सवारी ढेंचू-ढेंचू, बुढ़ऊ को भाये
ई बुढ़ऊ आये टाँग तोड़ाये।

ई बुढ़ऊ गाये चले 'सात'
सींपो-सींपो गधा गया खो
गधे की सवारी ढेंचू-ढेंचू, बुढ़ऊ को भाये
ई बुढ़ऊ आये टाँग तोड़ाये।

ई बुढ़ऊ गाये चले 'आठ'
सींपो-सींपो गधा गया खो
गधे की सवारी ढेंचू-ढेंचू, बुढ़ऊ को भाये
ई बुढ़ऊ आये टाँग तोड़ाये।

ई बुढ़ऊ गाये चले 'नौ'
सींपो-सींपो गधा गया खो
गधे की सवारी ढेंचू-ढेंचू, बुढ़ऊ को भाये
ई बुढ़ऊ आये टाँग तोड़ाये।

ई बुढ़ऊ गाये चले 'दस'
सींपो-सींपो गधा गया खो
गधे की सवारी ढेंचू-ढेंचू, बुढ़ऊ को भाये
ई बुढ़ऊ आये टाँग तोड़ाये।

स. द. स

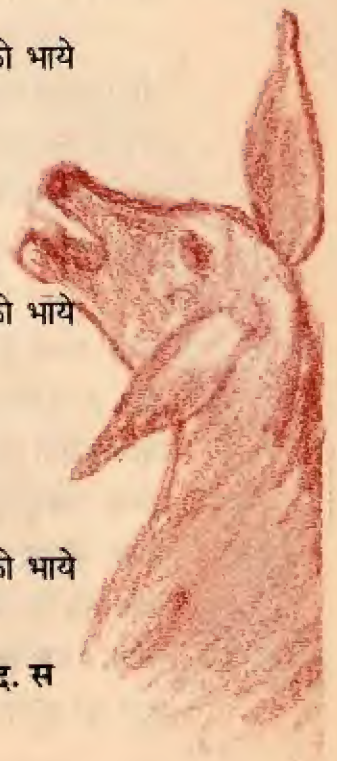

परीक्षा की घड़ी न आती

टामी मेरे साथ में आता
बगल में बैठ दुम हिलाता
किसी का तोता, किसी की बिल्ली

चिड़िया घर सी होती खिल्ली
मास्टरजी जोकर बन जाते
सरकस जैसा खेल दिखाते।

परीक्षा की घड़ी न आती
जिसमें नाड़ी तेज न होती
न कोई पीछे छूट जाता
न कोई आगे अकेले हो जाता
रिजल्ट का कोई चक्कर न होता
लाल रंग को कोई गोला न होता

चींटी इतनी निर्दयी न होती
टिडडे को भी खाना देती
हर दिन ऐसा मेला होता
स्कूल मोहल्ले सा हो जाता

कभी-कभी मैं अम्मा बनती
और कभी पापा बन जाती
जैसे चलती, वैसे बनती
उनके जैसे धूप सेकती
बच्चों को भी धमकाती
और सब पर रोब जमाती
काश ! यह सपना सच हो जाता
तारों का झुरमुट हाथ में होता।

चक्कर

आओ एक बनायें चक्कर
फिर उस चक्कर में इक चक्कर
फिर उस चक्कर में इक चक्कर
फिर उस चक्कर में इक चक्कर
और बनाते जायें जब तक
ऊब न जायें थक कर।

फिर सब से छोटे चक्कर में
म्याऊँ एक बिठाएँ,
और बाहरी हर चक्कर में
चूहों को दौड़ाएँ!
दौड़-दौड़ कर सभी थकें
हम बैठें मारे मक्कर,
नींद लगे हम सो जायें
वे देखें उझक-उझक कर।

आओ एक बनायें चक्कर।

स. द. स

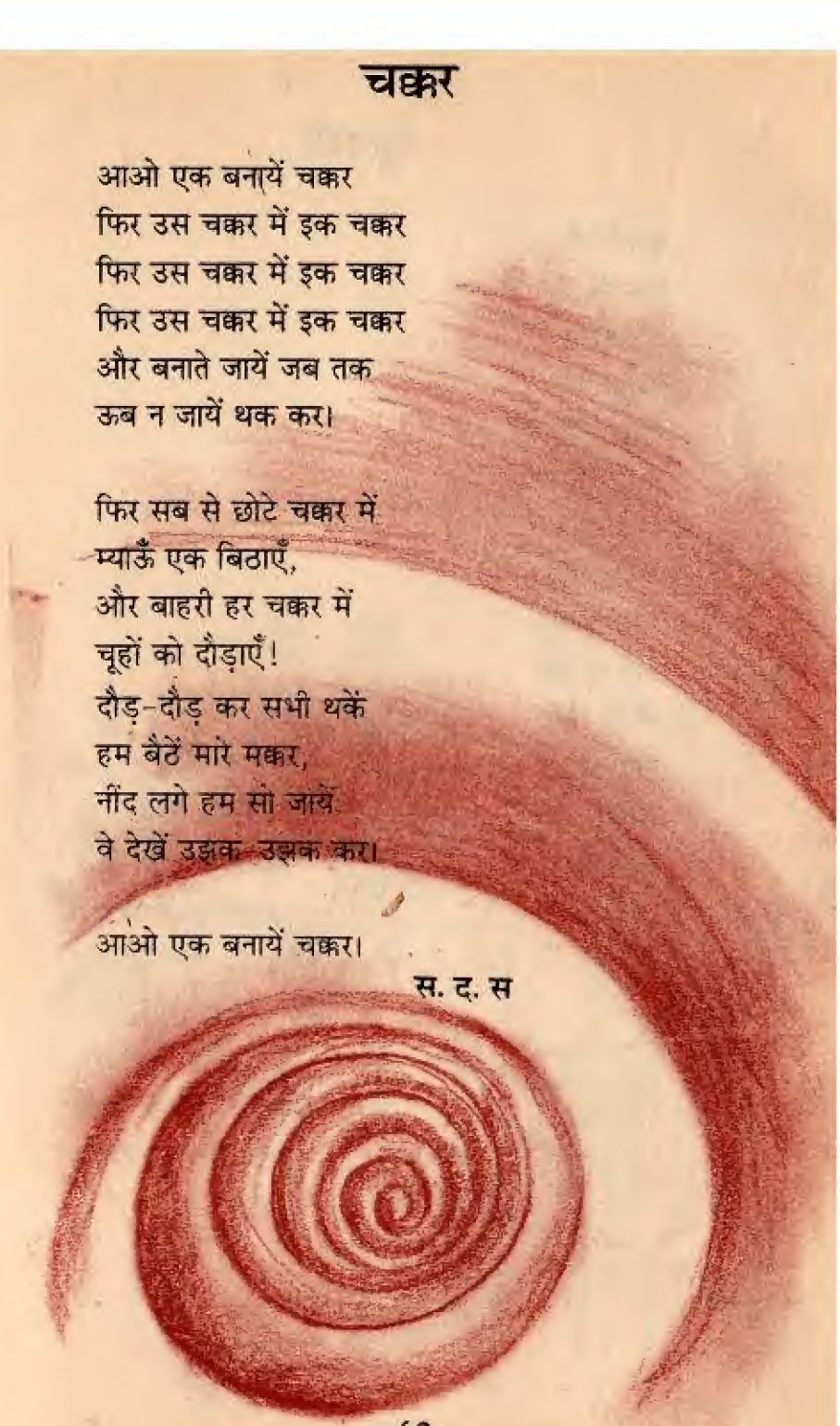

तुलसी

काली माँ
वृंदा माँ
वृंदावन है
इसका पता
तोड़ो, लेकिन
एक ही पत्ता
गोरी बाय
काली बाय
मच्छर दानी
नहीं तो क्या
काला पौधा
लगा दो
मच्छरों को
भगा दो!

केला

गंदा पानी मैला पानी
पानी पानी आँगन में
आँगन में ही इसके हुए
एक दो नहीं, सौ बच्चे
माँ परसती खाना
बच्चे बैठे पंगत में
दामन फाड़ा अपना
पत्तल उसी का बना

दो रेखोयें समान्तर

दो रेखोयें समान्तर
चली दौड़ती दूर कहीं
दौड़े दौड़े थक गयी-
बदन मे पीड़ा हो गयी
एकने कहा दूसरी से
चलो, करें आराम यहीं पर
आओ मेरे पास तुम
रखो माथा कंधे पर
लेकिन कैसी अजीब बात
बदन तो देखो, झुकता नहीं
मिलने की दोनों की चाहत
जरा भी पूरी होती नहीं
दूसरी फिर बोली-चढ़ो
और थोड़े फासले पर
हममें उतना जरूर है बल
शायद कष्ट ही दे फस!'
दोनों निकली थी बेखबर
सज़ा भुगतनी है उनको
उनके बीच का वह अन्तर
क्या है अक्षय और निरन्तर?
कहाँ मिलेंगी ये दोनों?
कहते हैं कि अनन्त में
तब तक दौड़ेगी दोनों
कब तक? ये तो हम ना जानें!
बाकी बातें तब होगी
अगर ये दोनों कभी मिलेंगी।
('नापासांची शाका' से)

घोड़ा

हवा से मेरा घोड़ा
बात करता है,
सभी को दौड़ने में
मात करता है।

थका कोई मिला
तो पीठ हाज़िर की,
सफ़र सबके लिए
दिन-रात करता है।

न चाबुक इस को मारो
आदमी हो कर,
बड़ी यह जानवर की
जात करता है।

स.द.स.

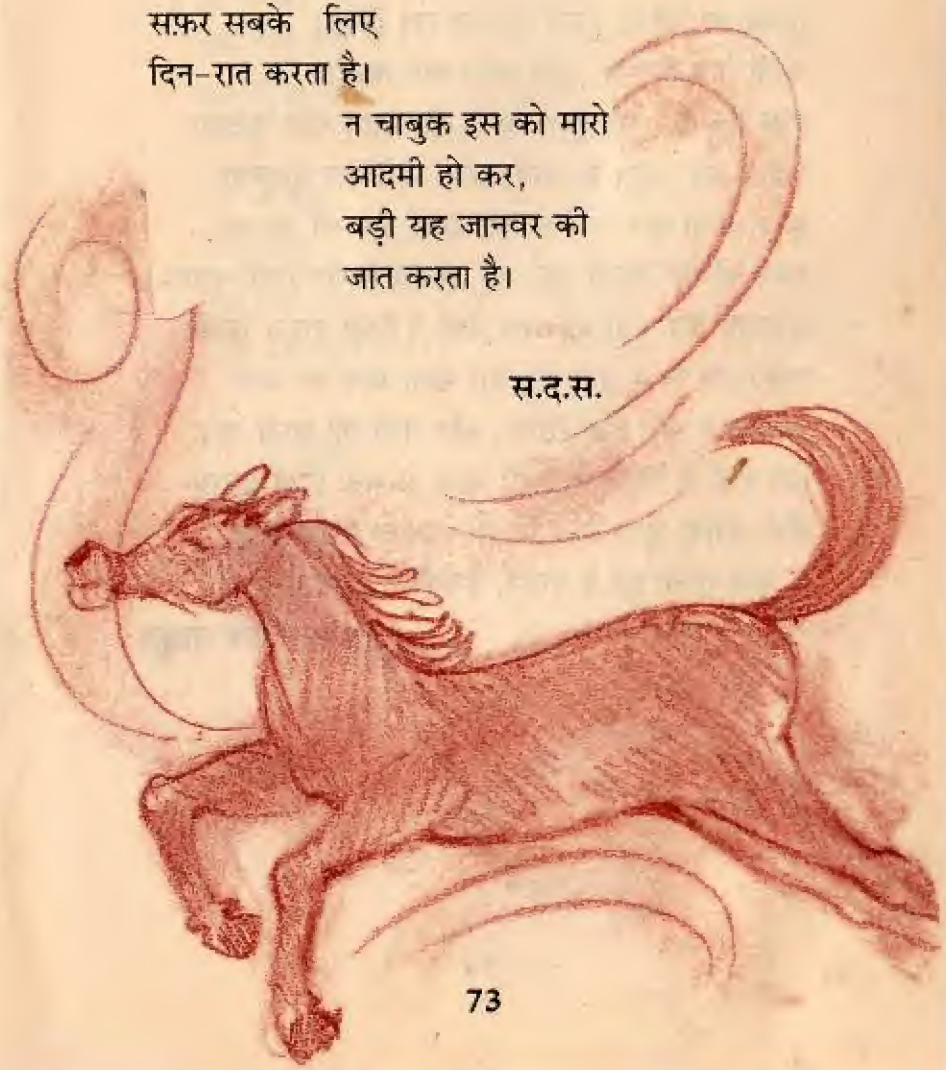

गांव में चले लठ्ठ

सदा हमारे गांव में होती नहीं लड़ाई
कभी-कभार जो होत है हल्ला, सबको दिया सुनाय
कुन्ना मुन्ना दो भइया थे, एक दिन उनमें ठनी लड़ाई
देखन को सब दौड़े, छोड़-छोड़कर अपनी पढ़ाई
कुन्ना बोलो मुन्ना कान खोल कर सुन ले आज
बंधिया फोड़ी खेत की तूने, तेरा तो मोड़ा मर जाय
गुस्सा आ गई तो उसने लठिया लई निकार
गाली गुप्ता हो रही, मुन्ना करन लगे तकरार
हल्ला सुन के मुकद्दम आये और आये गांव कुटवार
सयाने बड़े बहुत से आये, और आये पंच मुख्त्यार
कुन्ना बोलो सब पंचों से, जा अर्जी सुन लो महराज
इसने बंधियों फोड़ी खेत की, इसका निर्णय दियो कराय
बुलवाये फेर मुन्ना को और पंचों ने दिया हुकम सुनाय
माफी मंग ले तू कुन्ना से, तेरी खता माफ हो जाय
अभिमानी मुन्ना फिर गरजो, और पंचों की मानी नाय
सब पंचों ने किया फैसला, जाता से बन्द दियो कराय
जैसो झगड़ा हुआ गांव में, मैंने तुमको दिया बताय
जे कुछ गल्ती हुई है इसमें, उसको देना माफ कराय

हरनाम सिंह ठाकुर

अ से आम

'अ' से आम
एक गयी खो
एक खा गये हम।

'इ' से इमली
ख से खटमल
एक गयी मुंह में
एक दिया चल।

'उ' से उल्लू
ग से गधा
एक यहाँ था
और एक वहाँ था।

'ऐ' से ऐनक
घ से घड़ी
दोनों कुएं में
गिर पड़ी।

स.द.स.

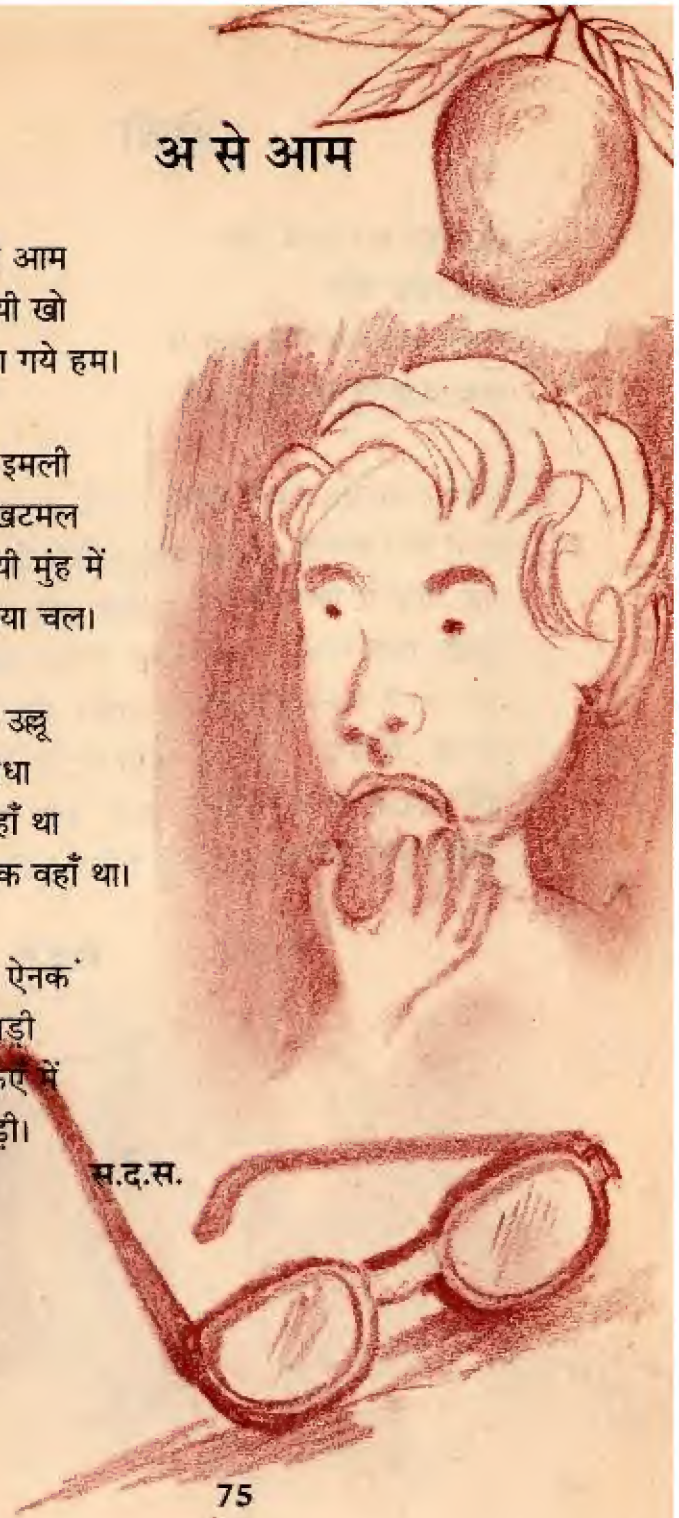

हाथी

सूंड उठा कर हाथी बैठा
पक्का गाना गाने,
मच्छर इक घुस गया कान में
लगा कान खुजलाने

फटफट फटफट तबले जैसा
हाथी कान बजाता,
बड़े मौज से भीतर बैठा
मच्छर गाना गाता।
पूछ रहा है एक-दूसरे से
जंगल- ऐ भैया,
हमें बता दो इन दोनों में
अच्छा कौन गवैया?

स.द.स.

दिल्ली- दर्शन

एक, दो, तीन, चार
आओ चलें, कुतुब मीनार।
पाँच, छः, सात, आठ
देखें चल के राजघाट।
नौ, दस, ग्यारा, बारा
चलें चाँदनी चौक फव्वारा।
तेरा, चौदा, पन्द्रा, सोला
कनॉट प्लेस में मुर्गा बोला।

स.द.स.

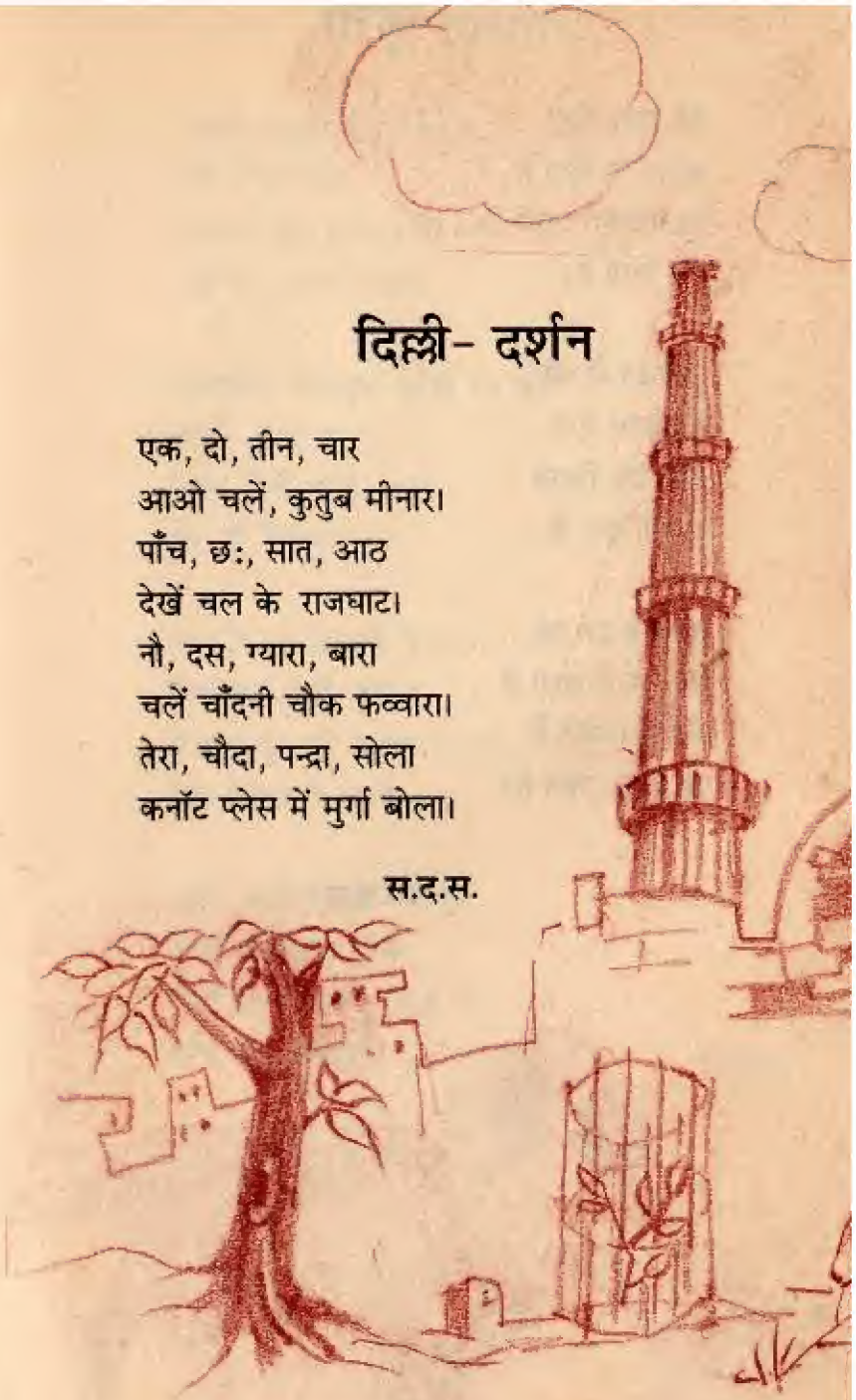

कुत्ता

यह कुत्ता मेरा
आदत से सगा है,
जो पुचकारे उसी के
संग लगा है।

मुसीबत में भी
तेरा साथ देगा,
नहीं देता किसी
को भी दग़ा है।

शराफ़त इस की
रग-रग में बसी है,
जब हम सोते हैं
यह रहता जगा है।

स.द.स.

खरगोश

उजले-उजले कपड़े पहने
बैठे हैं खरगोश,
कितनी दौड़ लगा आये हैं
नहीं है इस का होश।

चकमक-चकमक आँखें इन की
लम्बे-लम्बे कान,
सूरत से हैं भोले-भाले
पर पूरे शैतान।

एक मिनट भी इन्हें बैठना
बिलकुल नहीं सुहाता,
उछल-कूद ही करना इन को
बस केवल है आता।

अगर कहीं इन के जैसा
सारा जंगल हो जाये,
तो ईश्वर भी कान पकड़ ले
हाथ मले पछताये।

स.द.स.

धनिया

मेरी बनती मुड़िया
मेरी बनती चटनी
मैं हूँ तरोताजी
मेरी बनती सब्जी
रसोई का काम खतम
काटो फिर मेरी गर्दन
सब्जी, कचुमर, हो या दाल
मेरा स्वाद करे कमाल
थोड़ी रही अगर कुसूर
सँभाल लूँगी मैं सब कुछ
सुनो बहू, माँ, मौसी
मुझ बिन रसोई कैसी?

शेख़चिल्ली

एक था शेख़चिल्ली
उसने पाली बिल्ली
बिल्ली गयी दिल्ली
दिल्ली में थी किल्ली
किल्ली ऊपर चढ़ गयी
सबने उड़ाई खिल्ली।

स.द.स.

चीनी खायी

रामू - रामू?-हाँ, बापू।
चीनी खायी?-ना, बापू।
झूठ बोलता?-ना, बापू।
अच्छा मुँह खोली-हू-हू-हू।

स.द.स

नाच

गली-गली नाचा करती थी
लड़की एक - नताशा,
गर्म तवे पर पैर पड़ गया
वह बन गयी बताशा।

गोरा-चिटटा रंग हो गया
हुई फूल कर कुप्पा,
उसे देखता रहता था
माली का बेटा चुप्पा।

एक रोज़ उस के ऊपर
कुछ ऐसी शामत आयी,
फिसला पैर गिरी पानी में
दी फिर नहीं दिखायी।

स. द. स

दो बहनें

विभा–शुभा दो बहनें
आयीं दिल्ली रहने
पहने नक़ली गहने
ठाठ बड़े, क्या कहने !

(विभा और शुभा अपनी दोनों बिटियों के लिए)

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

तीन चीजें

हमने तीन चीजें देखीं
दादा तीन चीजें देखी
एक डाल पर थी इक मकड़ी
लकड़ी पर बैठी थी मकड़ी
मकड़ी खा रही थी ककड़ी
लकड़ी मकड़ी ककड़ी
मकड़ी लकड़ी ककड़ी
ककड़ी लकड़ी मकड़ी
हमने तीन चीजें देखी
दादा तीन चीजें देखी
एक खेत में था कुछ बालू
बालू पर बैठा था कालू
कालू खा रहा था आलू
बालू कालू आलू
कालू बालू आलू
आलू कालू बालू

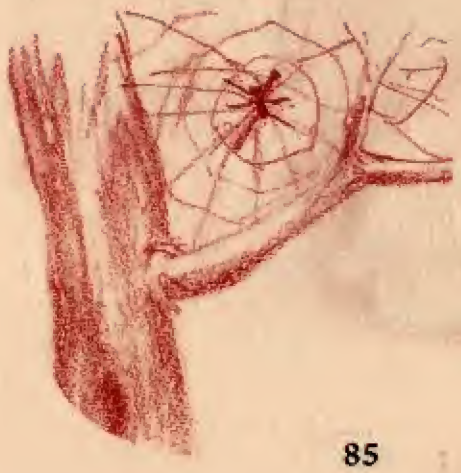

भैया

ता ता थैय्या
सुनो मेरे भैया
यों ही मत चीखो
काम काज सीखो
अगर खाते हो खाना
तो सीखो उसे पकाना
अगर फाड़ते कपड़े
तो सीखो उनको सीना
भरना सीखो पानी
अगर तुम्हें हैं पीना
अपना काम खुद करे जो
है उसी का जीना

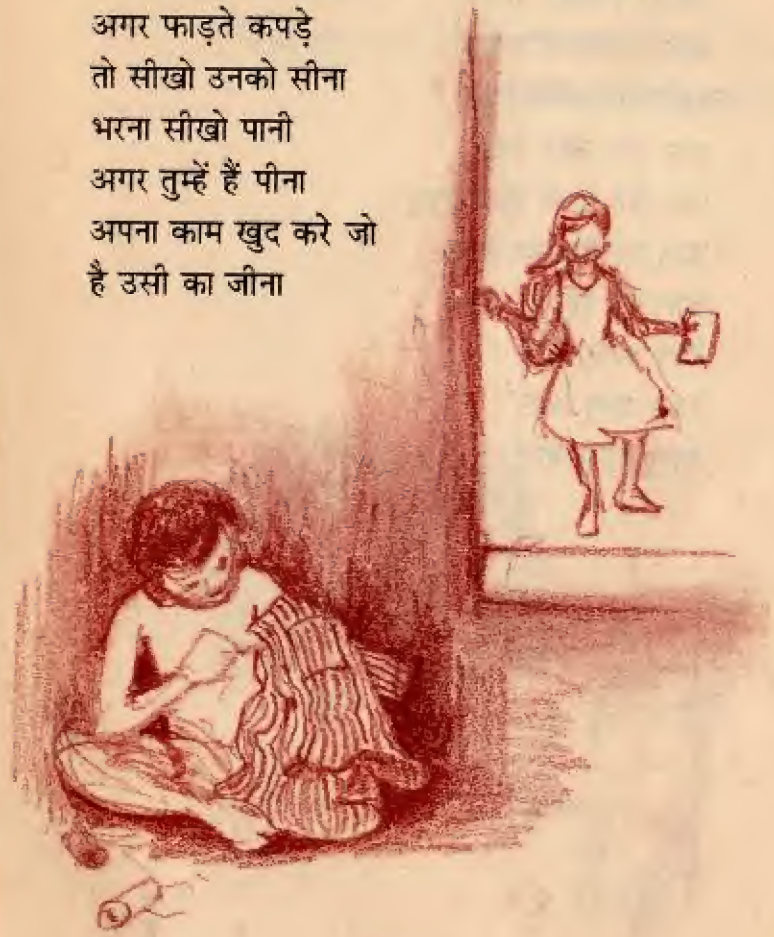

घास-पात

हम हैं सिर्फ एक पात
एकजुट रहते साथ
ओस बिंदु के गहने तन पर
मोतियों की फिर क्या बात
छोटी साँस छोटा तन
पाँव तले बेचारे हम
ढोर डंगर का चारा हम
छोटे मगर जिगर के बड़े हम
छोटा मुँह और बात बड़ी
फिर भी पूछेंगे सवाल
पर्यावरण किस चीज का नाम
मालूम है?- तो होगा काम।

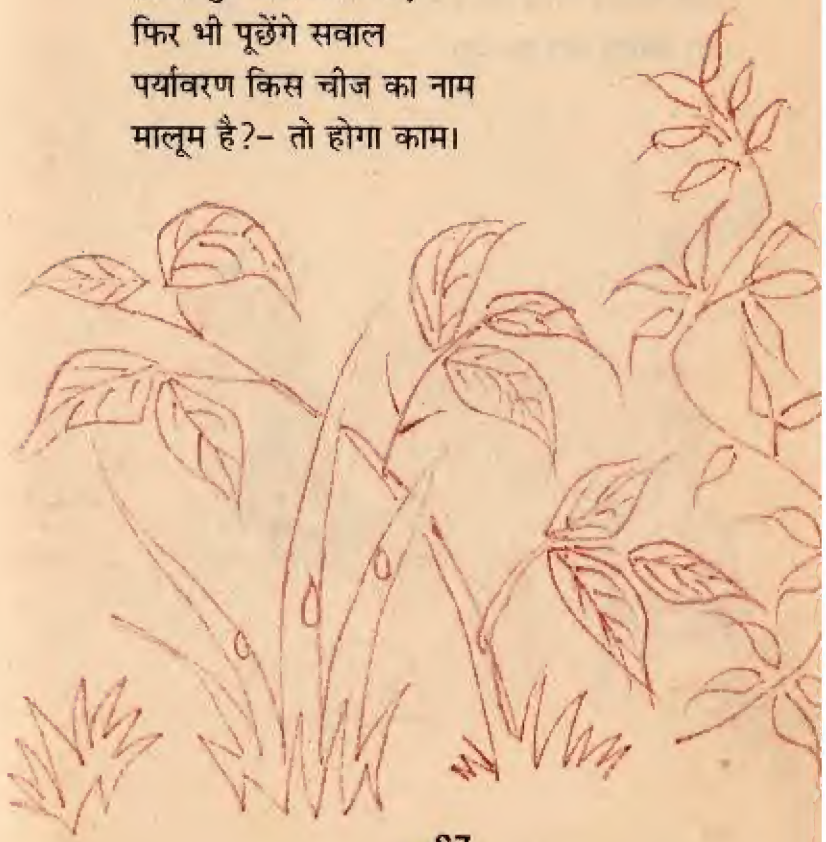

विज्ञान

देखो, जाँचों, परखो जानो
तब तुम किसी बात को मानो
नित-नित नूतन करो प्रयोग
परिणामों का कर लो योग
इनसे जो मिलता है ज्ञान
वह कहलाता है विज्ञान
कारण क्या है पता लगाये
भेद खोलकर हमें दिखाये
यह विज्ञान सत्य का रूप
दूर भगाये भय का भूत

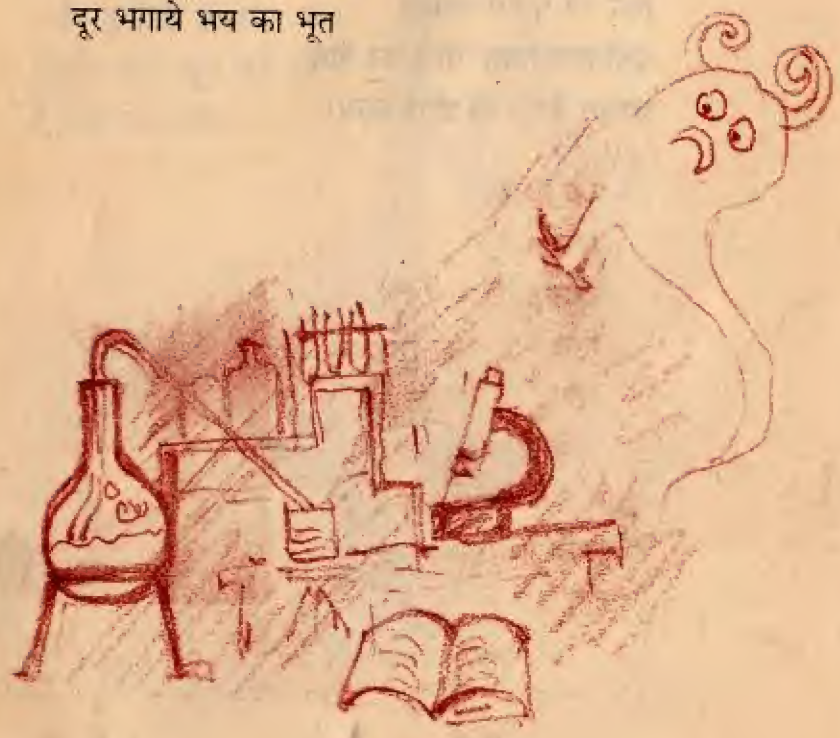

किश्ती

इक छोटी किश्ती मेरे पास
नयी बनवायी, नीली रंगवायी
और डाली पानी में
इधर देखा, उधर देखा
और कूदा किश्ती पे
किश्ती डगमगा गई
उलट गयी, पुलट गयी
और डूबी पानी में

अभिनय गीत

मालती के बच्चों को सर्दी लग गई
उसे गरम तेल से मालिश करेंगे
मा-मा-मा-मा-मालती
और बच्चा तदूरूस्त हो गया

शेवगा

(सहिजन, सहिंजन, शोभाज

हरा हरा घघरा
नाचे कौन
दांडिया रास
खेले कौन
हरी हरी दांडिया
हम दें ताल
कल उन्हें तोड़कर
उसल में डाल!

अगर पेड़ भी चलते होते

अगर पेड़ भी चलते होते,
कितने मजे हमारे होते।
बाँध तने में उसकी रस्सी,
जहां कहीं भी ले जाते।
अगर कहीं पे धूप सताती,
उसके नीचे झट सुस्ताते।
जहाँ कहीं भी वर्षा हो जाती,
उसके नीचे हम छिप जाते।
भूख सताती अगर अचानक,
तोड़ मधुर फल उसके खाते।
आती कीचड़ बाढ़ कहीं तो,
ऊपर उसके झट चढ़ जाते।

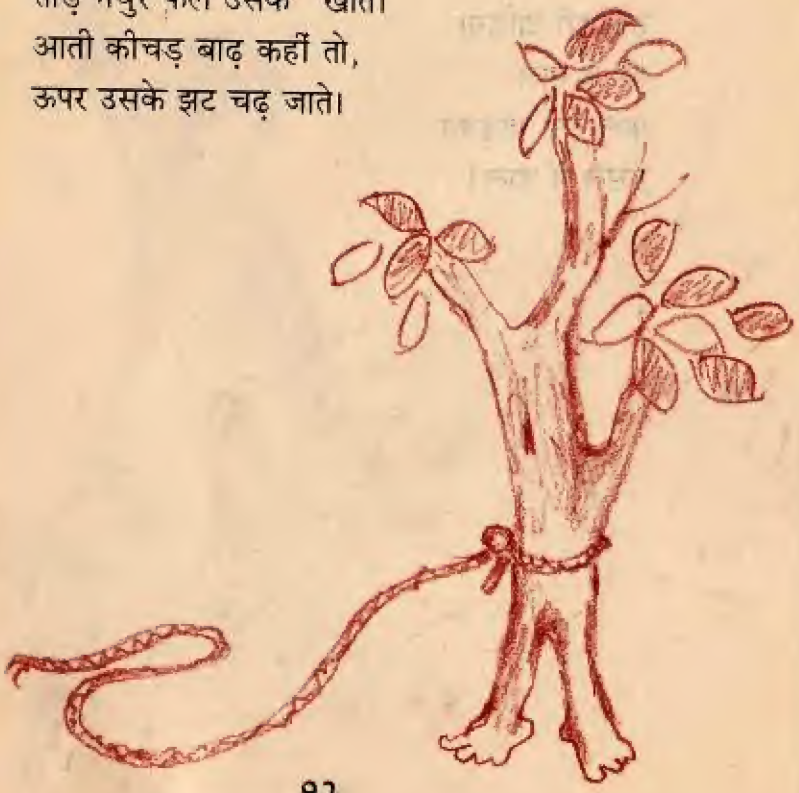

सैर

इक सर्दी की दोपहर को
निकल पड़ी मैं सैर को
झूम झूम कर मैं जाती थी
गुन गुन गाना मैं गाती थी
पर अरे-ये देखो कैसा चक्कर
खोला जूता मैंने लपककर
झाँका जब जूते के अन्दर
उसमें था मोटा सा कंकड़
कंकड़ जी को बाहर निकाला
जूतों को पैरों में डाला
और सर्दी की दोपहर को
चली मैं फिर से सैर को
झूम झूम कर मैं जाती थी
गुन गुन गाना मैं गाती थी
पर अरे-ये फिर से कैसा चक्कर
खोला जूता मैंने लपककर
जूते के अन्दर जब झाँका
बॉल छुपा था उसमें बाँका
काले बॉल को बाहर निकाला
जूते को फिर पैर में डाला
फिर सर्दी की दोपहर को
चली मैं आगे सैर को
झूम झूम कर मैं जाती थी
गुन गुन गाना मैं गाती थी
पर अरे-ये फिर से कैसा चक्कर

फर फर फर

उड़ी चिरैया फर फर फर
ऊंचे नीचे पेड़ों पर
चौका आंगन में छत पर
गली मुहल्ले सबके घर
उड़ी चिरैया फर फर फर
तिनके जोड़ बनाये घर
करती काम रहे दिनभर
कभी नहीं बैठे थककर
उड़ी चिरैया फर फर फर
खेले कूदे चींचीं कर
बड़े मजे से इधर उधर
ताता थैया खुश होकर
उड़ी चिरैया फर फर फर

तीतर

लड़कों इस झाड़ी के भीतर
छिपा हुआ है जोड़ा तीतर
फिरते थे यह अभी यहीं पर
एक तीतरी है इक तीतर
हमें देखकर आगे भीतर
आओ इनको जरा डराकर
ढ़ेला मार निकाले बाहर
यह देखो वो दोनों आगे
खड़े रहो चुप बढ़ो न आओ
अब सुन लो इनकी किलकारी
एक अनोखे ढंग की प्यारी
तीइत्तड़ तीइत्तड़ तीइत्तड़ तीइत्तड़
नाम इसी से इनका तीतर।

बच्चा टोली

एक पिटारा हमने खोला
जिसमें निकला गप्पू गोला
उस गोले को दिया तमाचा
कठपुतली बनकर वह नाचा
कठपुतली ने गाड़े खूँट
बंधे मिले जिनमें सौ ऊँट
उन ऊटों पर हुई सवारी
मिली राह में सड़ी सुपारी
सड़ी सुपारी को जब काटा
उसमें निकला नौ मन आटा
उस आटे की लपसी घोली
निकली उसमें बच्चा टोली

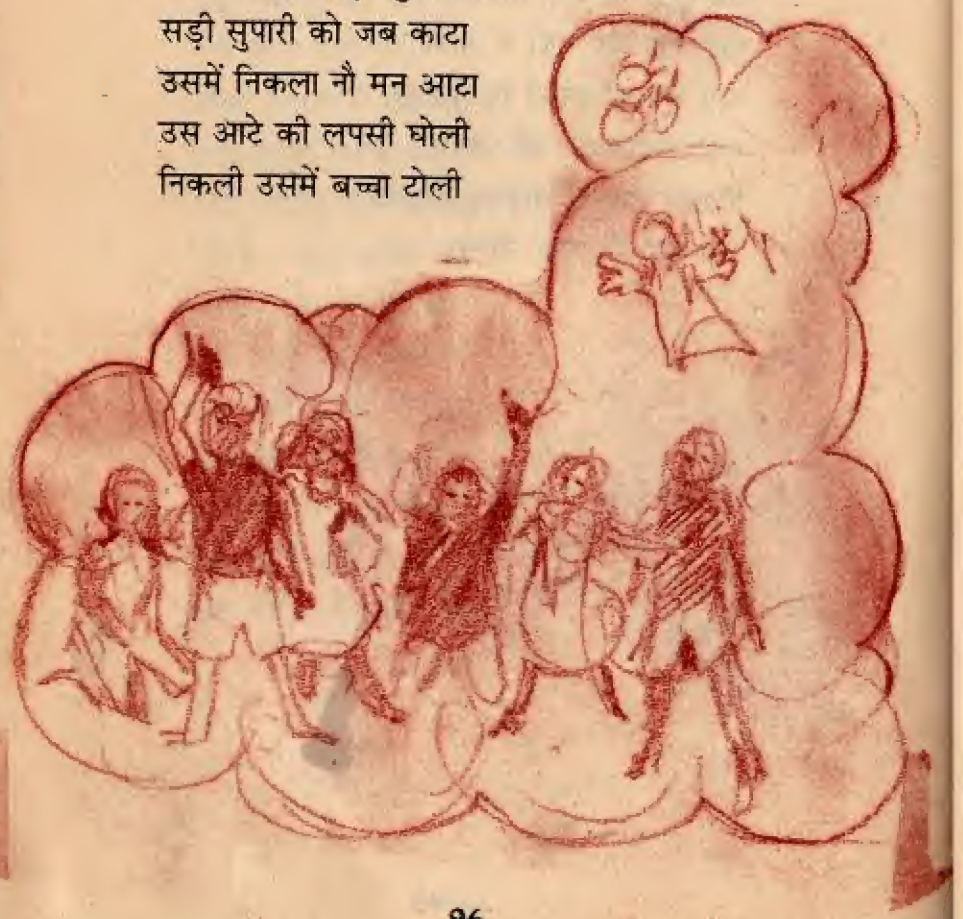

टिल्लू यार

घोड़े पर हो गये सवार
चले सैर को टिल्लू यार
मगर उन्हें कुछ रहा न ध्यान
घोड़ा जागा सरपट चाल
बुरा हुआ टिल्लू का हाल
जैसे-जैसे कसी लगाम
वैसे-वैसे बिगड़ा काम
आगे जाकर आया खेत
जिसमें थी कुछ ज्यादा रेत
गिरे वहीं पर टिल्लू यार
कभी नहीं फिर हुए सवार

चूहों की हड़ताल

बिल्ली ने खोला स्कूल
बैठ गई लेकर एक रूल
माफ करी जब पूरी फीस
आए चूहे बीस पच्चीस
उल्टा सीधा पाठ पढ़ाया
चुपके से इक चूहा आया
जाने किसने खोली पोल
शोर किया और पीटा ढोल
दरवाजे में ताला डाल
चूहों ने कर दी हड़ताल

घर से हुए बेघर

तुम कहते हो हम हैं चोर,
तुम कहते हम छापामार,
हम ही तहस-नहस कर जाते
खलिहानों में मक्का-ज्वार।

जब भूख से मरते हैं हम
तब ही खेतों में जाते;
हमारे जंगल काटे तुमने,
घूम नहीं हम पाते।

जहाँ हमारा बीहड़ वन था
वहाँ खेत जोते तुमने;
अपने लिए, बच्चों के लिए
धन-धान जमा किया तुमने।

हाथी, बाघ, लोमड़ी, चीता
हो गए हैं हम सब बेघर;
मौत की ओर बढ़ते जाते हम;
करो न नष्ट हमारा घर!

(जंगलों के विनाश के खिलाफ)

विजया घोष

हाथी

हाथी आता झूमके,
धरती मिट्टी चूमके।
कान हिलाता आता हाथी,
गन्ने पत्ते खाता हाथी।
देखो इसके लम्बे दाँत,
मुंह के अन्दर दूसरी पाँत।
आंखे इसकी छोटी-छोटी,
सूँड़ तो इसकी काफी मोटी।
धम्मक धम्मक आता हाथी,
धम्मक धम्मक जाता हाथी।
अपनी सूंड़ उठाता हाथी,
अपनी सूंड़ गिराता हाथी।
अपनी पूँछ हिलाता हाथी,
धम्मक-धम्मक आता हाथी।
जब पानी में जाता हाथी,
भर-भर सूँड़ नहाता हाथी।
कितने केले खाता हाथी,
यह तो नहीं बताता हाथी।
धम्मक-धम्मक आता हाथी,
धम्मक-धम्मक जाता हाथी।

लाल लाल

लाल लाल लाल लाल
क्या सब कुछ होता लाल
सुबह का सूरज लाल
शाम का सूरज लाल लाल
लाल लाल लाल लाल
हमारा खून लाल लाल
तोते की चोंच लाल
मसूर की दाल लाल लाल
लाल लाल लाल लाल
जलती आग लाल लाल
पकी हुई मिर्च लाल लाल
कटा तरबूजा लाल लाल
और क्या होता लाल लाल
जल्दी ढूंढो लाल लाल
लाल लाल लाल लाल

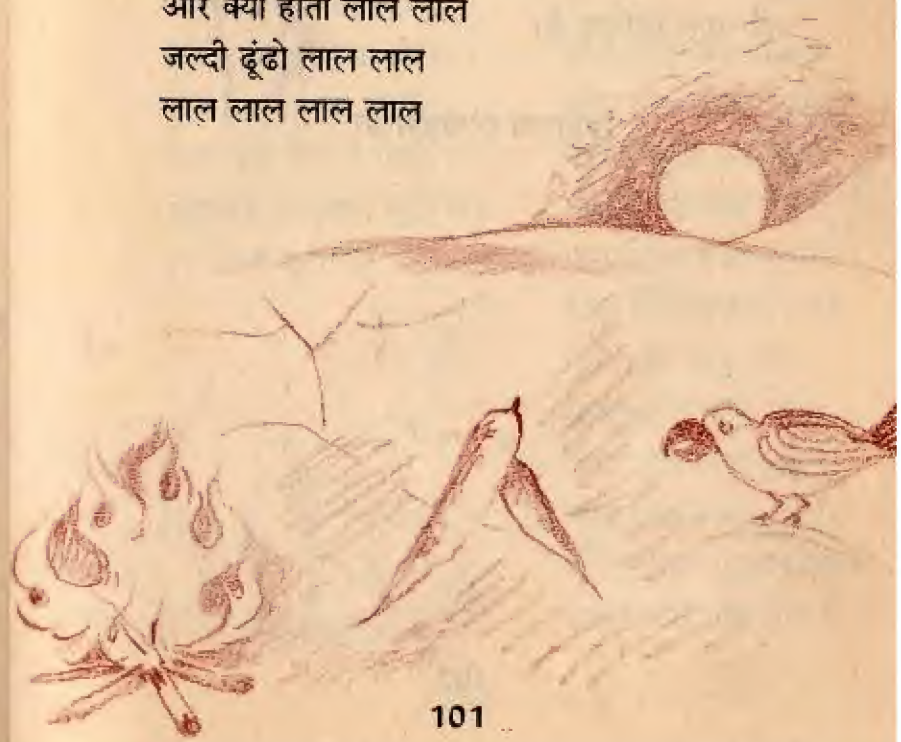

चिड़िया

यह चिड़िया है
यह पेड़ों पर रहती है
इसके तो घर भी नहीं
घोसलों में यह रहती
भोजन के लिए उसको
खोज करनी पड़ती
इधर-उधर फुदककर
दिन भर उसके बच्चे रोते रहते हैं
जब तक वह बच्चों को छोड़कर
नहीं जाए तो
उसे और उसके बच्चों को
भूखा मरना पड़ता है
यही प्यारी चिड़िया है।

राजाराम व चंद्रशेखर

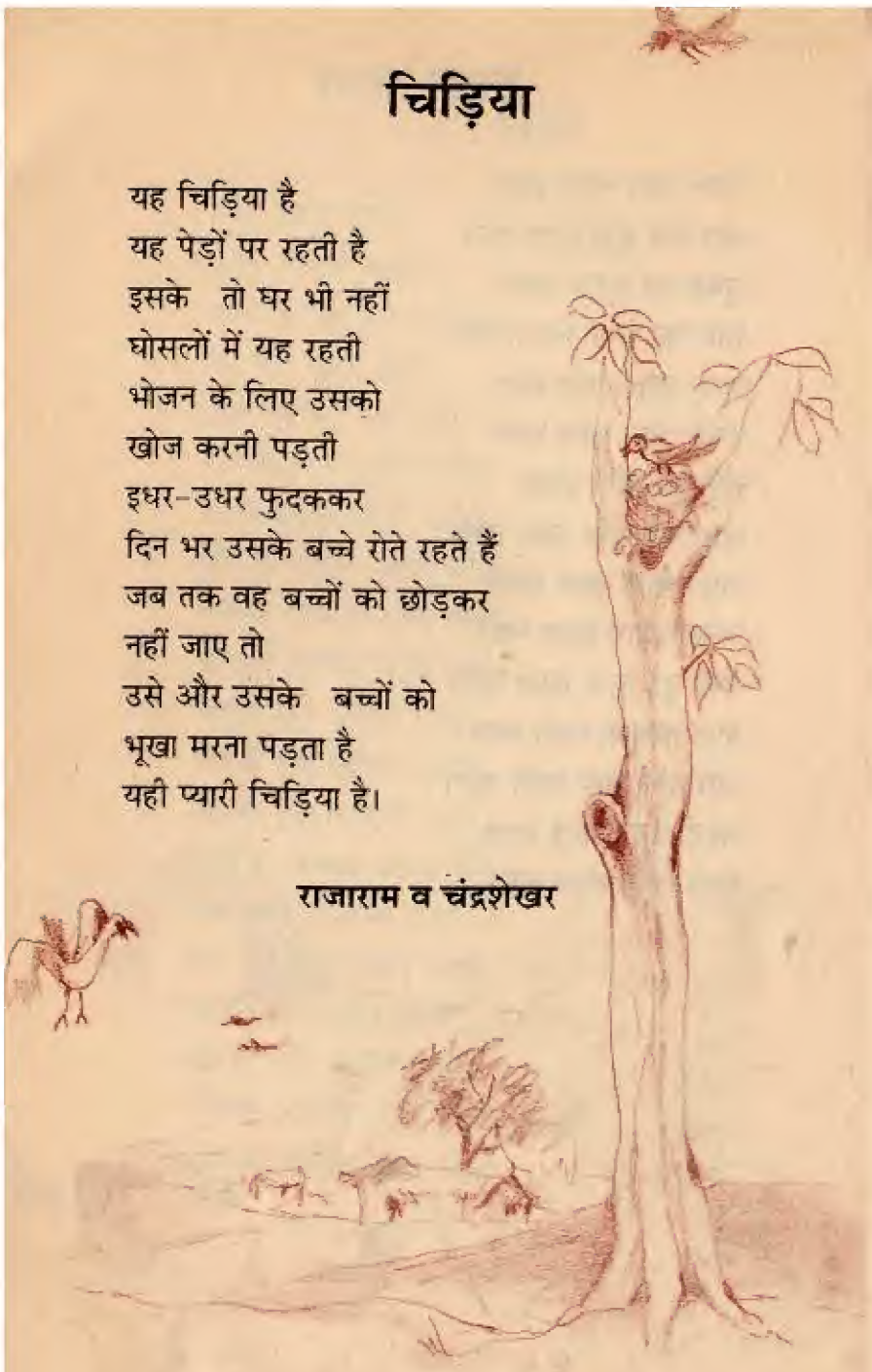

सोहनलाल द्विवेदी के गीत

एक

चल बे घोड़े, चल बे चल
इधर उधर, मत बहुत मचल
बायें चल, मत दांये चल
सीधे पैर जमाये चल
बहक नहीं मत अधिक मचल
चल बे छोड़े चल बे चल
चल बे घोड़े चल बे चल
नहीं लगाऊँगा दो कोड़े
भूल जायेगा सब छल बल
चल बे घोड़े, चल बे चल

दो

घर घर ईंट बनाई रेल
हमने रचा अनोखा खेल
एक ईंट में लात जमाई
लात सभी ईंटो ने खाई,
खड़खड़ खड़खड़ छूटी रेल
ईंट फैली टूटी रेल

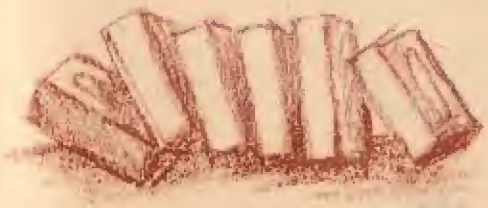

तीन

मीठा मीठा होता खाजा
मीठा होता हलुआ ताजा
मीठे रसगुल्ले अनमोल
सबसे मीठे मीठे बोल।
मीठा होता पुआ सुहारी
मीठी होती कुल्फी न्यारी
मीठे होते गट्टे गोल
सबसे मीठे मीठे बोल।
मीठा होता दाख छुहारा
मीठा होता शक्कर पारा
मीठा होता रस का घोल
सबसे मीठे मीठे बोल।

गुड़िया का ब्याह

मम्मी-पापा गए बाजार
हम बच्चे थे घर पर चार
फिर शुरू खेल किया हमने
लिया गुडडे को मुन्नु भैया ने
और गुड़िया को मुन्नी रानी ने

एक दिन मुन्ना-मुन्नी गए बाजार
वहां हुई दोनों की मुलाकात
हुई वहां दोनों की बातें दो-चार
फिर तय हुआ गुड्डा-गुड्डी का ब्याह

गुड्डा-गुड़िया के नए कपड़े आए
खूग मिठाई पकवान बनाए
और सबको निमंत्रण दे आए

एक दिन दुल्हन बनी गुडडी रानी
लगती सुंदर-सलोनी जैसे हो परी की रानी
गुडडा भी होकर तैयार
बनकर राजा घोड़े पर सवार

फिर शुरू हुआ कार्यक्रम जयमाल
दोनों ने डाली एक दूसरे के गले में माला
हम सब ने भी खूब नाचा गाया
इस प्रकार हुआ गुडड-गुडडी का ब्याह

तभी आए मम्मी-पापा
घर की दशा देखकर मम्मी बोलीं
कि इतनी देर से कर रहे थे क्या?
हम सब बोले, "गुडडा-गुडडी का ब्याह"

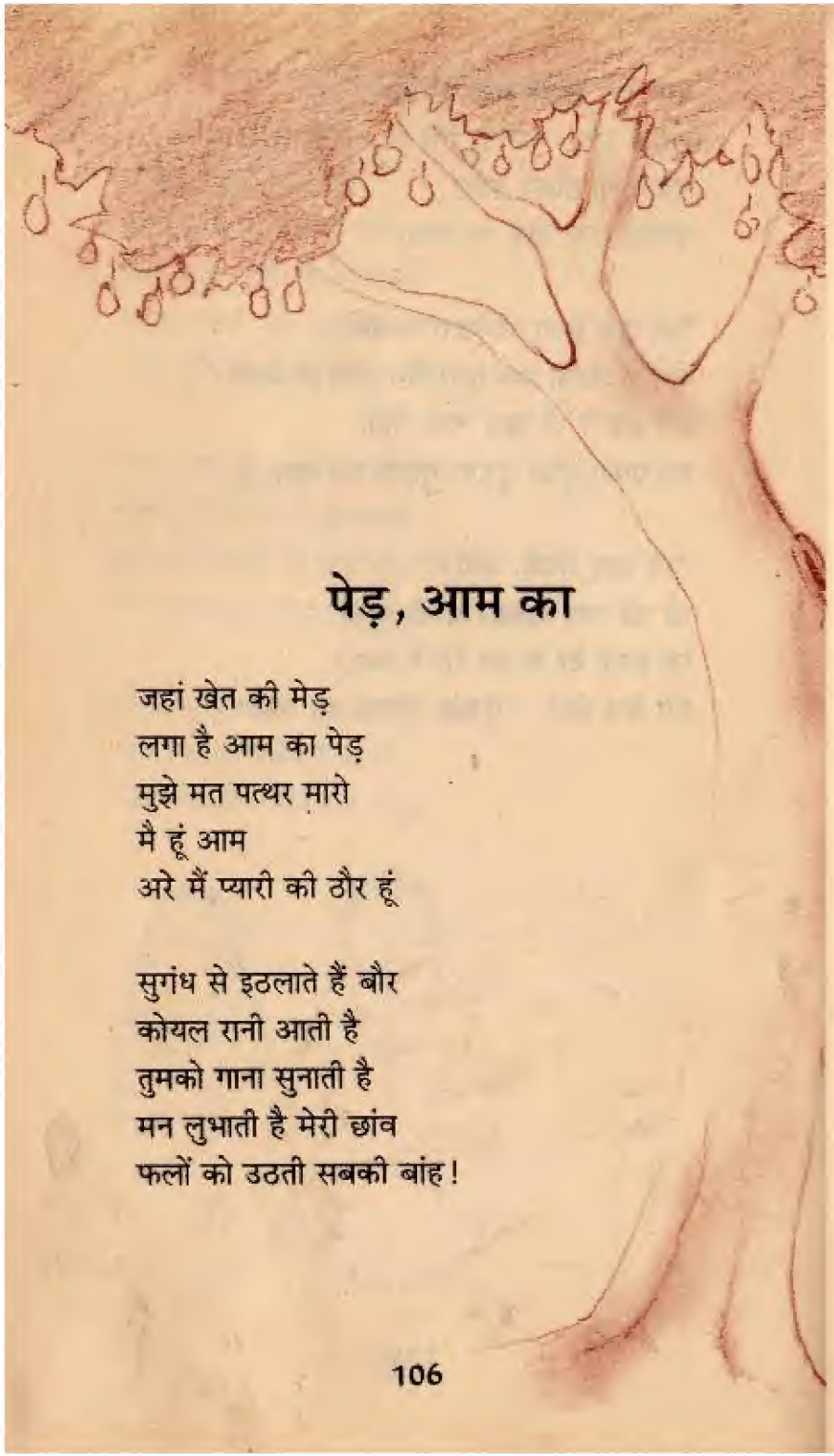

पेड़, आम का

जहां खेत की मेड़
लगा है आम का पेड़
मुझे मत पत्थर मारो
मै हूं आम
अरे मैं प्यारी की ठौर हूं

सुगंध से इठलाते हैं बौर
कोयल रानी आती है
तुमको गाना सुनाती है
मन लुभाती है मेरी छांव
फलों को उठती सबकी बांह!

झल्ली-उल्ला

खा के रसगुल्ला
हमने किया कुल्ला
पानी में उठा बुल्ला
देख रहे मुल्ला।
इल्ली उल्ला।

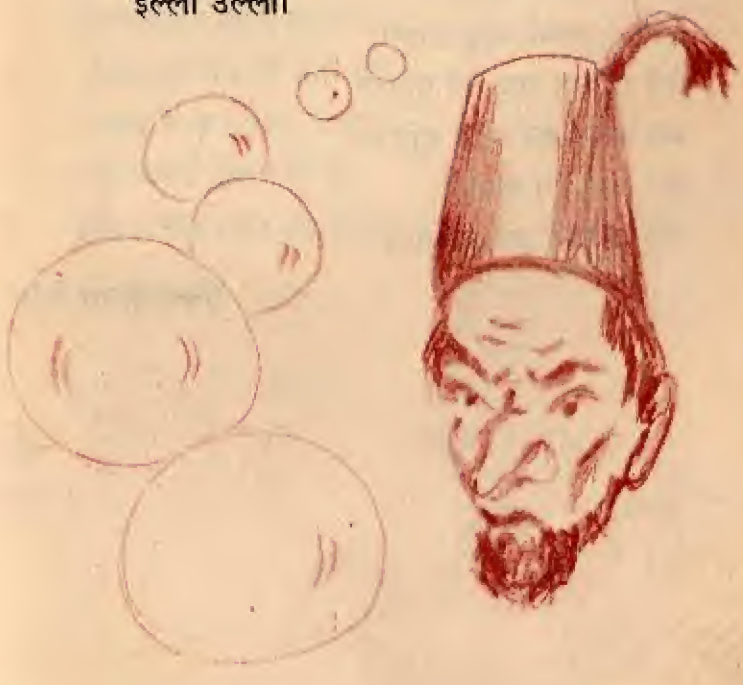

मेरा बंदर

मेरा बंदर मस्त कलंदर,
पल में बाहर पल में अंदर।
मेरा घोड़ा बड़ा निगोड़ा,
कभी न पीता पानी थोड़ा।
मेरी बिल्ली बड़ी चिबल्ली,
पलक झपकते पहुंची दिल्ली।
मेरा बाजा करे तकाजा,
पढ़ लिख लो तो बनोगे राजा।
मेरा तोता पंख भिगोता,
राम-राम रट के खुश होता।
मेरा हाथी सबका साथी,
लेकिन उसकी सूंड़ डराती।
मेरी गुड़िया जादू की पुड़िया,
रूप बदल बन जाती बुढ़िया।
मेरा टामी रंग बादामी,
पांव उठाकर करे सलामी।

तरुणकुमार सिंह

शाम का गीत

कल आने का कर के वादा,
किरणों की गठरी सहेजकर
लौट चले घर सूरज दादा।
लगीं झाँकने दनवाज़ों से
शर्माती-सी संध्या दीदी,
पीला-पीला थका हुआ दिन
हो आई है हवा उनींदी,
ओढ़ लिया सारी सड़कों ने
काला-काला एक लबादा-
चन्दामामा ने फिर आ के
सूरज वाला काम सम्हाला,
भीड़ जमा कर के तारों की
अम्बर में कर दिया उजाला,
रंग-बिरंगी रोशनियों से
निखरा रूप शहर का ज़्यादा।

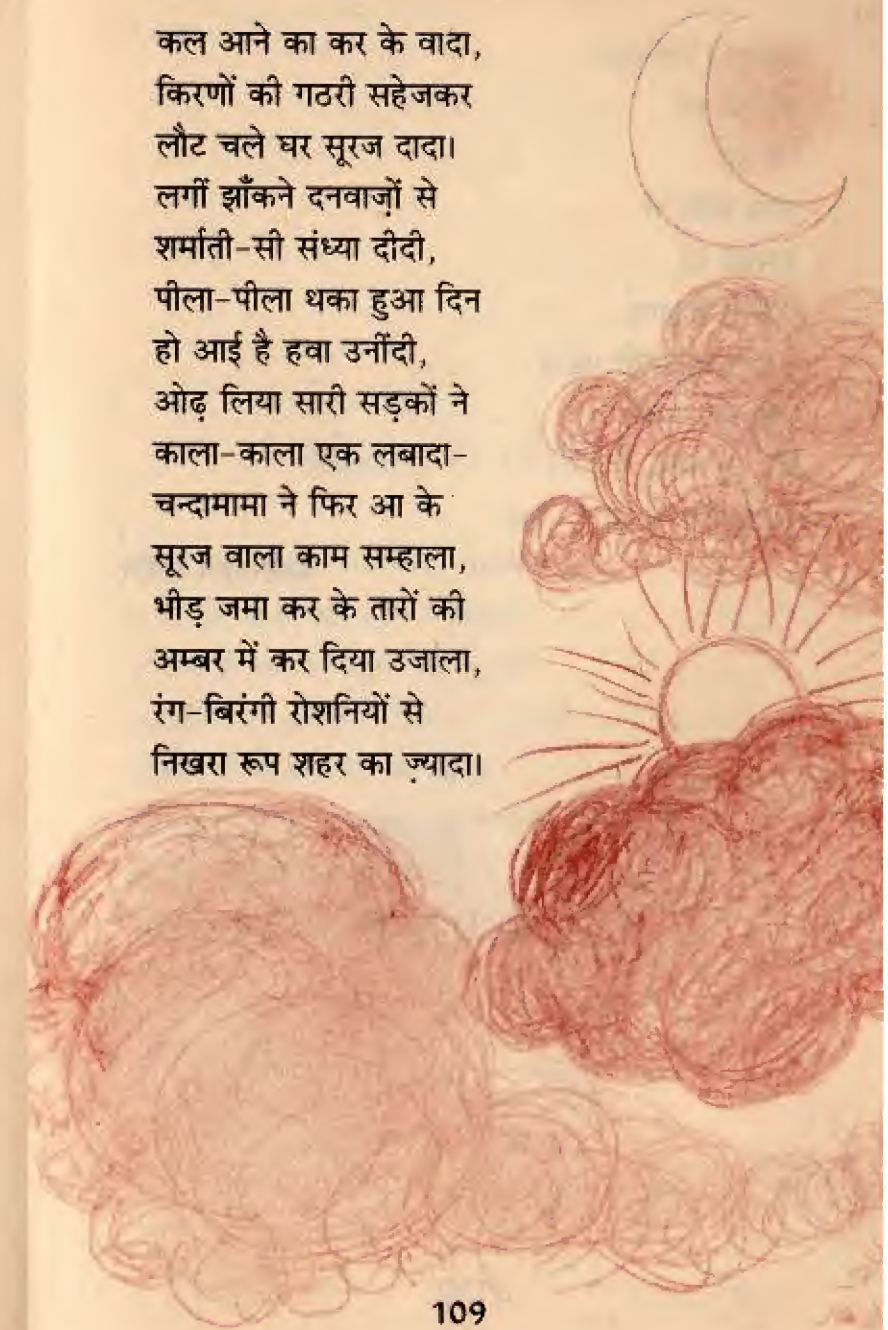

चिड़िया रानी

चिड़िया चिड़िया
चीं चीं चीं
आ जा
ठंडा पानी पी
हमको भी
दुनिया दिखला
हम सिखलाएंगे पढ़ना
फिर तुम करना
बी. ए. पास
चिड़िया रानी बी.ए. पास!

मन्नालाल राठौर

कोयल री कोयल

कोयल री कोयल, गा थोड़ा बैठकर
तू ही तो जंगल की लता मंगेशकर
कोयल री कोयल कहने को काली
कहलाती पर बोली से मिसरी बरसाती
कोयल री कोयल रंग तो काला
कौन तेरा लगता है कांव-कांव वाला
कोयल री कोयल दूध में नहाले
सच्ची तू परी लगे, पंख जो रंगा ले

बिजली रानी

बिजली रानी, बिजली रानी,
हाय तुम्हारा क्या कहना।
सूरज, चांद हमारे भैया,
तुम हो सबकी बहना।
बिजली रानी न्यारी है,
जगवालों की प्यारी है।
चिमनी में हम पढ़ते भाई,
यह दुखड़ा भी सुन लो भाई।
बार-बार अब बिजली रानी,
रूठ-रूठ जाती है।
कभी देर तक जलती रहती,
या घंटों गुल हो जाती है।
बिजली रानी, बिजली रानी,
बात हमारी सुनना।
अंधियारे को दूर भगाकर,
उजियारा ही करना।

वर्षा जोशी

आलू मिर्ची चाय जी

आलू मिर्ची चायजी, कौन कहां से आए जी
सात समन्दर पार से, दुनिया के बाजार से
व्यापार से उपहार से, जंग लड़ाई मार से
हर रस्ते से आए जी, आलू मिर्ची चाय जी
दक्षिण अमरीका की मिर्ची, चाखी जिसने चीभ जली
आलू अमरूद मूंगफली, खाते फिरते गली-गली
संग टमाटर आए जी, आलू मिर्ची चाय जी
भिण्डी है अफ्रीका की, भूरी-भूरी काफी भी
नक्शे में यूरोप जिधर, वहीं से आए गोभी मटर
चाय असम से आई जी, आलू मिर्ची चायजी
चीन से सोयाबीन चली, अमरीका को लगी भली
घूमघाम कर लौटी देश, उसमें गुण हैं कई विशेष
रौब जमाकर आइ जी, आलू मिर्ची चाय जी
बैंगन मूली सेम करेला, आम संतरा बेर और केला
पालक परवल टिण्डा मेथी, भाई बहन हैं ये देशी
भारत की पैदाईश जी, आलू मिर्ची चाय जी

काली अंधेरी रात में

उस दिन की काली अंधेरी रात में
किसी ने मेरे कानों में आकर कहा
उठो ए रहम दिल वालो
ऊपर नीचे सब जगह जहरीली गैस फैल रही है
हर इंसान की आंख में चुभ रही है
बागों-बगीचों की क्या?
हमसे हमको जुदा कर रही है।
उस दिन आधी रात को हमने यह देख लिया।
दिल शीशे की तरह टूट गया
हर इंसान को हवा की तरह भागते हमने
देख लिया।
फिर पल दो पल में जाने क्या हो गया।
देखते ही देखते महल श्मशान बन गया।
और जाने क्या हुआ
सारा चमन उजड़ गया।
हर पेड़ की हर कली, फूल का रंग बदल गया
हर पत्ता टूट गया सारे जहां में सन्नाटा छा गया
हर इंसान, इंसान को भूल गया
उस दिन की काली अंधेरी रात में।

शहनाज

(भोपाल गैस त्रासदी के बाद)

फूलों की क्यारियां

छोटी-छोटी क्यारियां,
इनमें खिले नन्हे फूल,
फूलों को हमें कभी नहीं मारना चाहिए,
इन पर हमें दया रखना चाहिए।
ये हमेशा मुस्कराते हैं,
यही इनकी सुंदरता है।
छोटी-छोटी क्यारियां,
इनमें खिले फूल
अगर इसके पास छोटे बच्चे रख दो
तो ये कितने सुंदर लगते हैं।
ये हमेशा मुस्कराते हैं,
यही इनकी सुंदरता है।
छोटी-छोटी क्यारियां,
इनमें खिले नन्हे फूल।
देखो, पानी में कमल के फूल,
पानी में तैरती बतखें,
कितनी सुंदर दिखती हैं
छोटी-छोटी क्यारियां, इनमें खिले नन्हे फूल।

अपर्णा मेहरा

अपने दोस्त

दोस्त हैं अपने भूल भुलक्कड़,
बात उनकी सारी गड़बड़।
पैदल हो तो रास्ता भूलें,
बस में जाएं तो बस्ता भूलें।
रेल में सोते-सोते जागें,
पहुंचें चार स्टेशन आगे।
धोती है तो कुरता गायब,
मोजा है तो जूता गायब।
प्याली में चम्चा उलटा,
फेर रहे हैं कंघा उलटा।

दुर्गा रावल

तोता हूं जी तोता

तोता हूं जी तोता हूं
हरी डार पर बैठा हूं!
लाल मेरी चोंच है
चंचल मेरी चाल है!
ताजा फल मैं खाता हूं
ठंडा पानी पीता हूं।
जब माली का पोरा देखा
फट से मैं उड़ जाता हूं!

रणवीरसिंह राजपूत

एक नन्ही बच्ची

एक नन्ही-मुन्नी बच्ची
खेल रही थी धूल में
हाथ-पांव भूरे हो गए उसके
फिर भी खेलती रही धूल में
एक नन्ही-मुन्नी बच्ची
नहा रही थी नल में
ठंड लग रही थी उसको
फटे हुए कपड़े में
एक नन्ही-मुन्नी बच्ची
जा रही थी स्कूल
हाथ में भारी बस्ता लिए
दुख रहे थे हाथ फिर भी
टांगे हुए थे बस्ता
एक नन्ही-मुन्नी बच्ची

अनुराग अग्रवाल

राजू और कद्दू

रज्जू के बेटे ने
मिट्टी के ढ़ेरों में
कद्दू के कई बीज
बोये बोये बोये बोये
रात का अंधेरा था
चूहों का डेरा था
दो चूहे बीज खाने
गये गये गये
सुबह को न ढेर थे
न कद्दू के बीज थे
दो चूहे मोटे हो के
सोये सोये सोये

प्यारा लड्डू

गोल-मोल है सबसे न्यारा
लडडू प्यारा, लडडू प्यारा।
मन कहता उसको खा जाऊं,
क्यों वह सबका धीरज खोता।
देखो जिसे वही ललचाता,
कोई उससे नहीं अघाता।
लडडू लेकर चटपट खाना,
है यह कैसा काम सुहाना।
हलवाई जो इसे बनाता,
क्यों मिठाई का है राजा
खाता वही बजाता बांजा।
हरदम है वह तान उड़ाता,
एक बार जो है पा जाता।
लडडू की है किस्मत भारी,
जिसे चाहते हैं नर-नारी।

पुरुषोत्तम सराठे

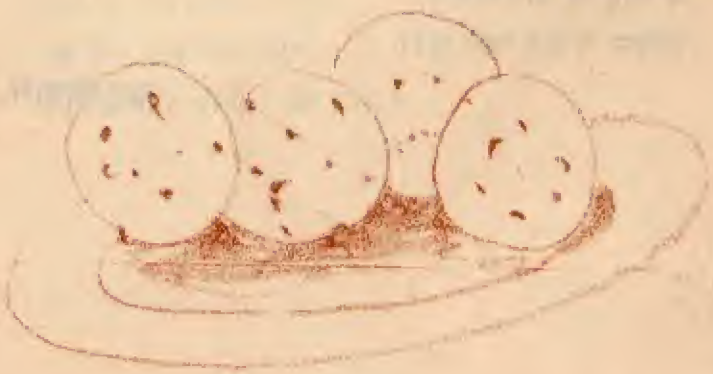

चिड़िया

एक चिड़िया के बच्चे दो,
फुदक-फुदक कर खेलें वो।
मेरे घरे के आंगन पर,
खिड़की और दरवाजे पर।
मैं चाहूं लूं उन्हें पकड़,
लेकिन ये उड़ जाते फुर्र।

ऋतु तिवारी

ऊँट

ऊँट बहुत ही मतवाला
उसको गुस्सा कम आता
एक अजूबा ऐसा जिससे
बिन पानी वह चलता जाता।

आँख मार के वह कहता,
"राज तो है मेरे कूबड़ में।"
रेगिस्तान का राजा कहता,
"है पानी का पम्प इसी में।"

"पानी साफ़? और इस सूखे में?"
तुम पूछोगे, हो हैरान।
"पीता तो हूँ, फिर भी बचाता,"
कहता है यह बुद्धिमान।

काश! अगर मैं होता ऊँट,
गर्मी में जब लगती प्यास,
तब होते सब मित्र हैरान,
क्योंकि पानी होता... मेरे पास!

बरसात

वो देखो उठी काली काली घटा
है चारों तरफ छाने वाली घटा
घटा के जो आने की आहट हुई
हवा में भी एक सरसराहट हुई
हवा आन कर मेह जो बरसा गई
तो बेजान मिटटी में जान आ गई
जमीं सबज़ से लहलहाने लगी
किसानों की मेहनत ठिकाने लगी
जहां कल था मैदान चच्यल पड़ा
वहां आज है घास का वन खड़ा
हजारों फुदकने लगे जानवर
निकल आए गोया कि मटटई में पर

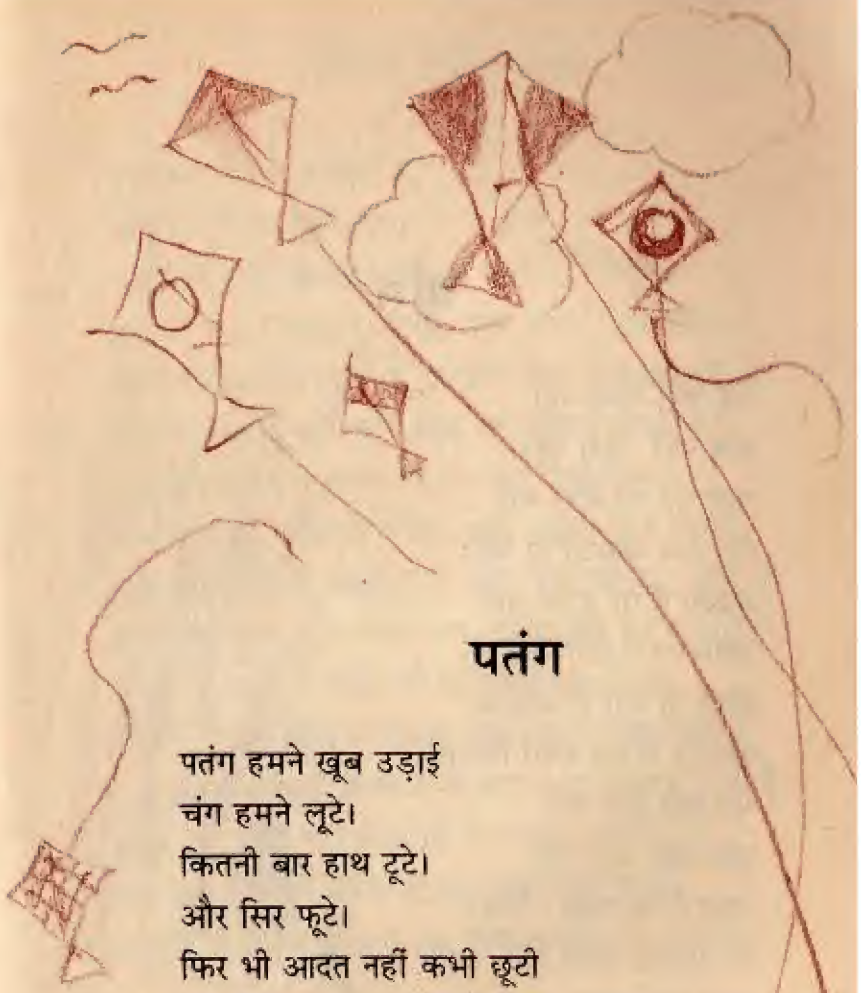

पतंग

पतंग हमने खूब उड़ाई
चंग हमने लूटे।
कितनी बार हाथ टूटे।
और सिर फूटे।
फिर भी आदत नहीं कभी छूटी
एक दिन काटा मुझको चूँटा।
तभी लगी हाथ में मुझको
और धागा टूटा।
उड़ती-उड़ती पतंग जाकर
पेड़ पर अटकी।
हवा के तेज़ झोंके आए
फिर भी न छिटकी।

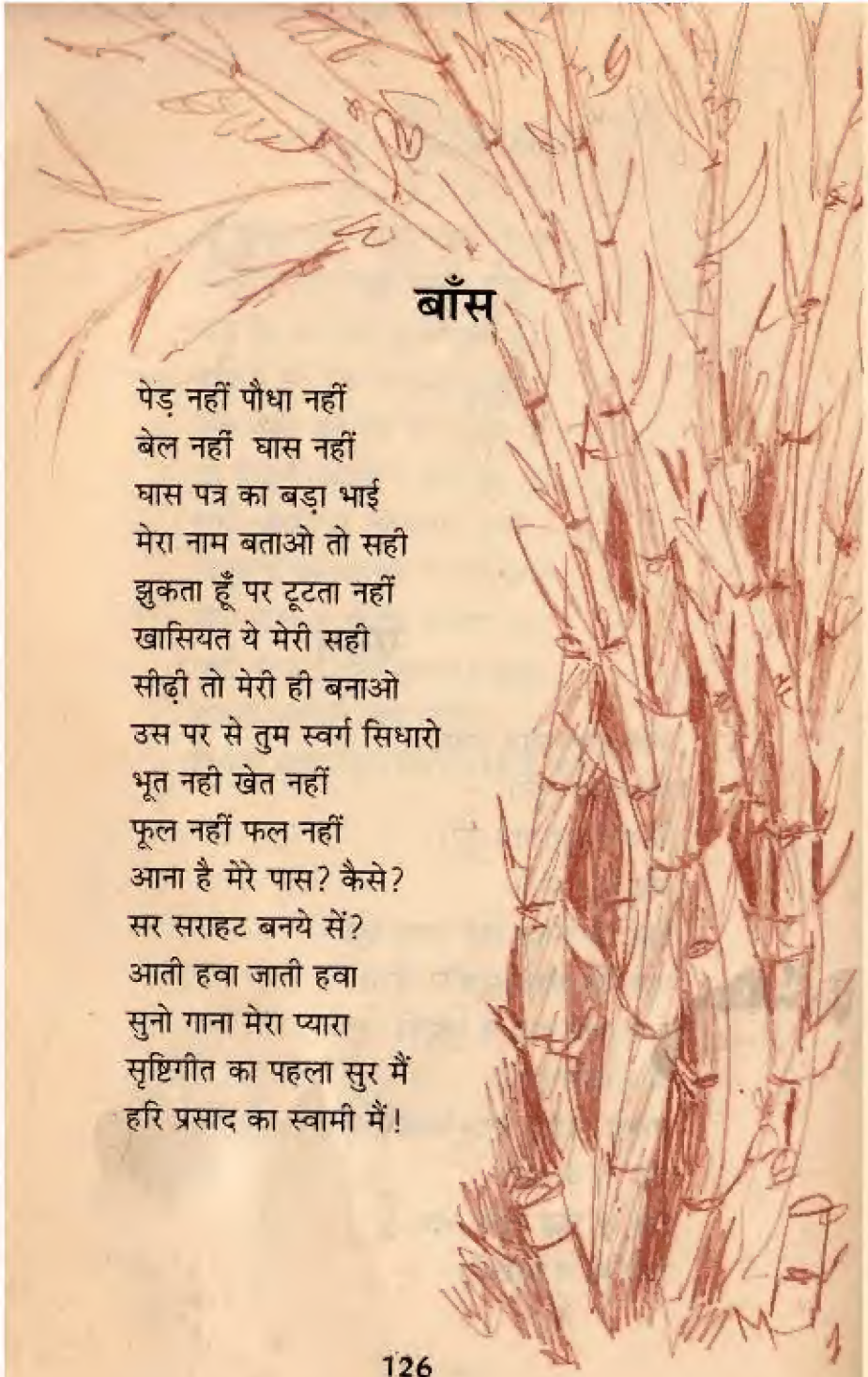

बाँस

पेड़ नहीं पौधा नहीं
बेल नहीं घास नहीं
घास पत्र का बड़ा भाई
मेरा नाम बताओ तो सही
झुकता हूँ पर टूटता नहीं
खासियत ये मेरी सही
सीढ़ी तो मेरी ही बनाओ
उस पर से तुम स्वर्ग सिधारो
भूत नही खेत नहीं
फूल नहीं फल नहीं
आना है मेरे पास? कैसे?
सर सराहट बनये सें?
आती हवा जाती हवा
सुनो गाना मेरा प्यारा
सृष्टिगीत का पहला सुर मैं
हरि प्रसाद का स्वामी मैं!

सपने की बात

हकीकत मेरी पाठशाला की।
बात है रात के सपने की॥
एक दिन सपने में बहन जी को आते देख लिया।
हाथ में डंडा, आंख पे ऐनक, नाक चढ़ाते देख लिया॥
जब गणित वाली आती है तो क्या-क्या पढ़ाकर जाती है।
गुणा करो और भाग करो, सिर दर्द बहाना बनाती है॥
एक दिन सपने में बहन जी को आते देख लिया।
हाथ में डंडा, आंख पे ऐनक, नाक चढ़ाते देख लिया॥
जब भूगोल वाली आती है तो क्या-क्या पढ़ाकर जाती है।
कोई यहां बसा, कोई वहां बसा, दुनिया की सैर कराती है॥
एक दिन सपने में बहन जी को आते देख लिया।
हाथ में डंडा, आंख पे ऐनक, नाक चढ़ाते देख लिया॥
जब इतिहास वाली आती है तो क्या-क्या पढ़ाकर जाती है।
व्हाट की जगह चाट कहा तो चट चांटा लगाती है॥
एक दिन सपने में बहन जी को आते देख लिया।
हाथ में डंडा, आंख पे ऐनक, नाक चढ़ाते देख लिया॥

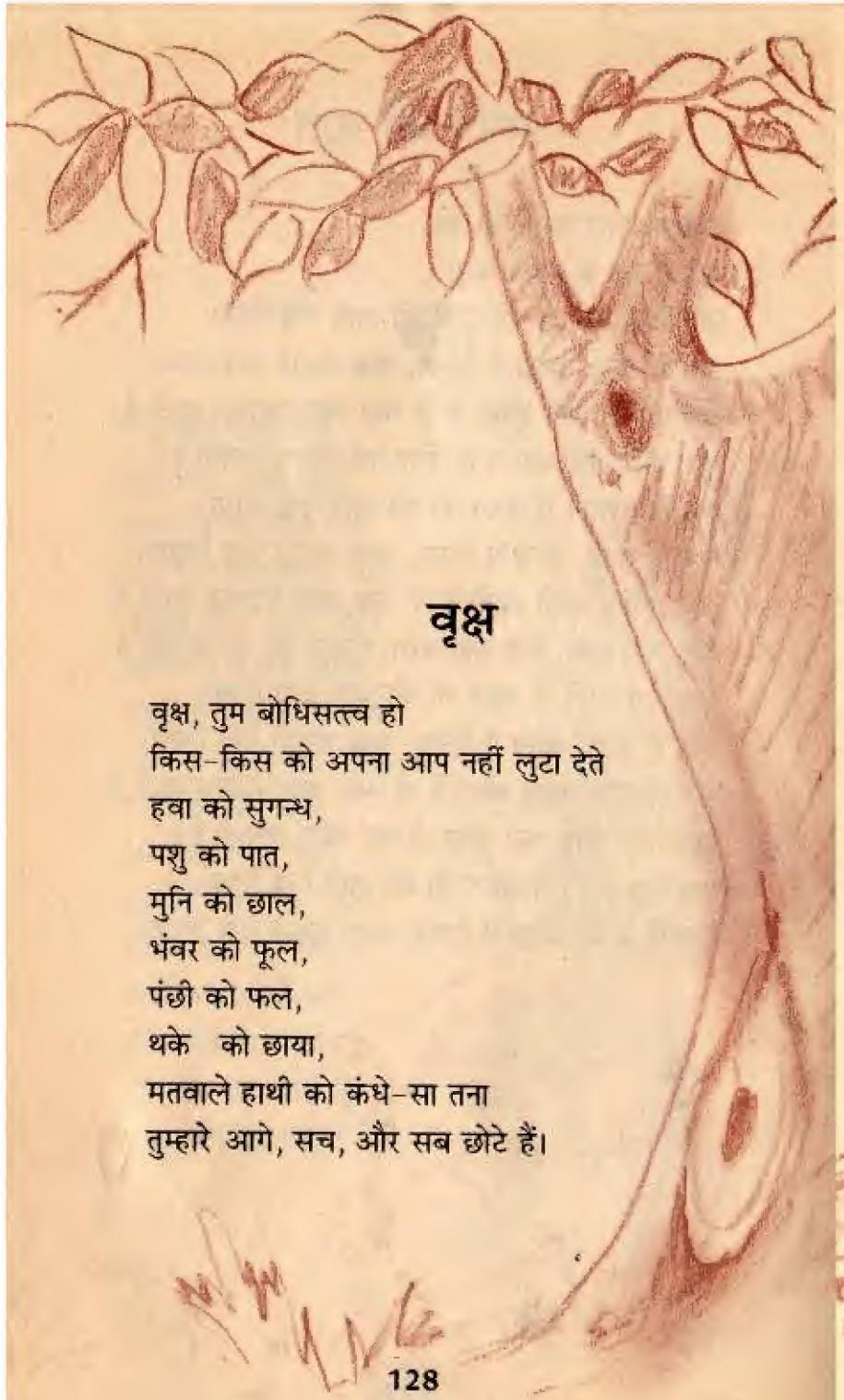

वृक्ष

वृक्ष, तुम बोधिसत्त्व हो
किस-किस को अपना आप नहीं लुटा देते
हवा को सुगन्ध,
पशु को पात,
मुनि को छाल,
भंवर को फूल,
पंछी को फल,
थके को छाया,
मतवाले हाथी को कंधे-सा तना
तुम्हारे आगे, सच, और सब छोटे हैं।

रेल

छुक छुक छुक छुक करती रेल
रेल कहाँ से जाती रेल
गाँवों में जाती, शहरों में जाती
पहाड़ों पे जाती,पर्वतों पे जाती
रेल कराती सबका मेल
छुक छुक छुक छुक करती रेल
रेल कहाँ जाती ये रेल।
डीजल से चलती बिजली से चलती
कोयले से भी भागी जाती रेल
बड़ा अनोखा इसका खेल
टिकिट नहीं लेता जो सफ़र फ्री में करता
उसको भिजवा देती है जेल
जो जन्म रेल में लेता उसको जीवन भर
बिन पैसे लाती ले जाती है रेल
छुक छुक छुक छुक करती रेल
रेल कहाँ जाती ये रेल।

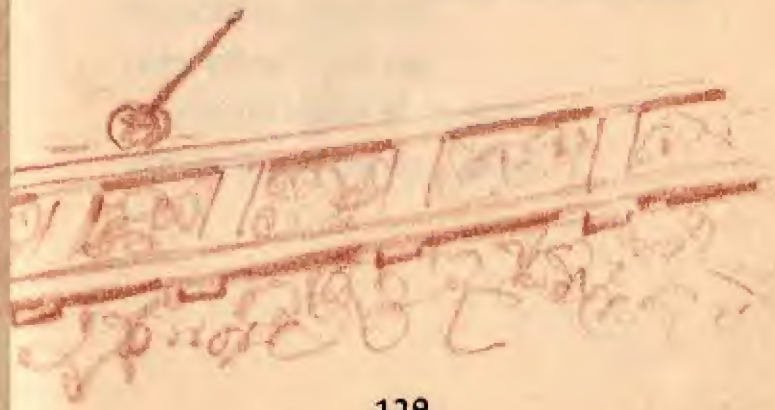

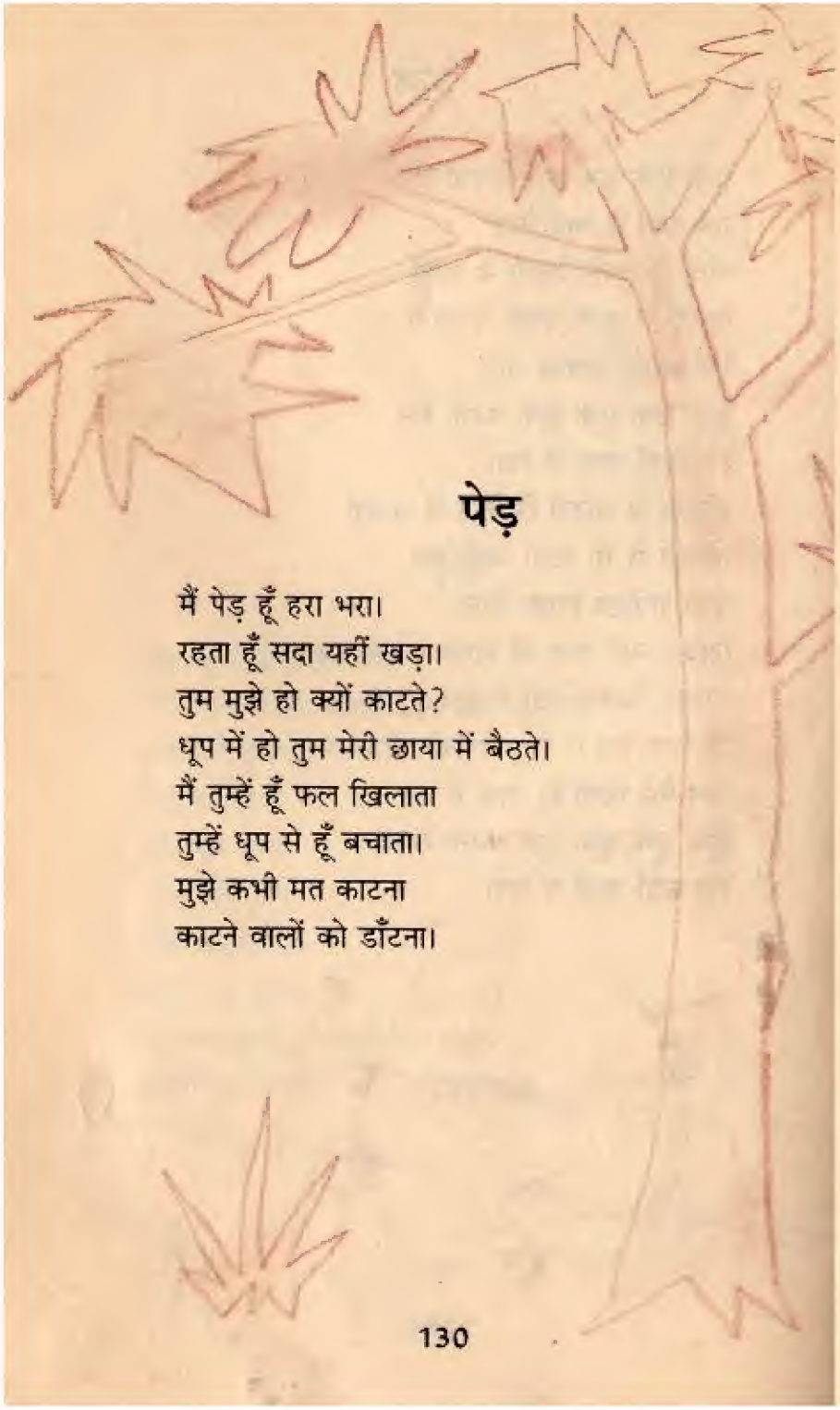

पेड़

मैं पेड़ हूँ हरा भरा।
रहता हूँ सदा यहीं खड़ा।
तुम मुझे हो क्यों काटते?
धूप में हो तुम मेरी छाया में बैठते।
मैं तुम्हें हूँ फल खिलाता
तुम्हें धूप से हूँ बचाता।
मुझे कभी मत काटना
काटने वालों को डाँटना।

जंगल में गृह युद्ध

एक दिन मै जंगल की करने गया था सैर
वहाँ सब जानवर रखते थे
एक दूसरे से बैर
शेर का दुश्मन था खरगोश
शेर उसको कहता था अहसान फरामोश
गीदड़ का था दुश्मन सियार
क्योंकि उसने खाई थी सियार में मार
गिलहरी का दुश्मन था बन्दर
भेड़िए का दुश्मन था भूल
उसका था एक और दुश्मन-हाथी
हाथी था भालू का साथी
नीलगाय का दुश्मन था हिरन
क्योंकि उससे जलता था उसका मन
चूहे का दुश्मन चिंपाजी था क्योंकि
चूहा उसको समझता था घमण्डी
जिराफ का था दुश्मन साँप
लम्बा नहीं था उसका माप
इस तरह सब जानवर हो गए क्रुद्ध
और एक दिन हो गया एक गृहयुद्ध।

मोर

आसमान हुआ कुछ गहरा
बादल का है रंग सुनहरा
तेज हो रहा बूँदों का शोर
नाच रहा अलबेला मोर
रंगीन बदन है कण्ठ है नीला
पंखों का है रंग चमकीला
लम्बे पर हैं सिर पर सेहरा
है मयूर का रूप सजीला
कीट सर्प चूहों को खाता
बारिश का मौसम इसको भाता
काली घटा जब छा जाती
पंख फैलाता, खुशी जताता।

वो आई गाड़ियाँ

वो आई गाड़ियाँ
वो आई गाड़ियाँ
बत्ती जो हो गई हरी
वो आई गाड़ियाँ ! वो आई गाड़ियाँ !
पुलकी खिड़की ये खड़ी
वो आई गाड़ियाँ ! वो आई गाड़ियाँ !
पुलकी है बदमाश बड़ी
खींच लाई कुर्सी
खिड़की ये जा चढ़ी
ओ हो हू हा
ऊँची मंज़िल से चीखे
पुलकी बार-बार
नीचे हल्ला-गुल्ला
दौड़े खुल्लम-खुल्ला
रंग-रंग की कार
बहुत कहा मत करो शोर
पुलकी न मानी न मानी
रही अड़ी की अड़ी
वो आई गाड़ियाँ ! वो आई गाड़ियाँ!
अब बत्ती हो गई लाल
कैसा हुआ कमाल
छोटी गाड़ी, बड़ी गाड़ी

बरसात

बादलों से जब आता सूरज
तब हो जाती गर्मी
फिर जब सूरज ढलता
हो जाती सर्दी
ठंडक में बच्चे खेलें कूदें
और मनाएँ मस्ती
अगर कभी बारिश हो जाए
तो बच्चे तैराएँ कश्ती।

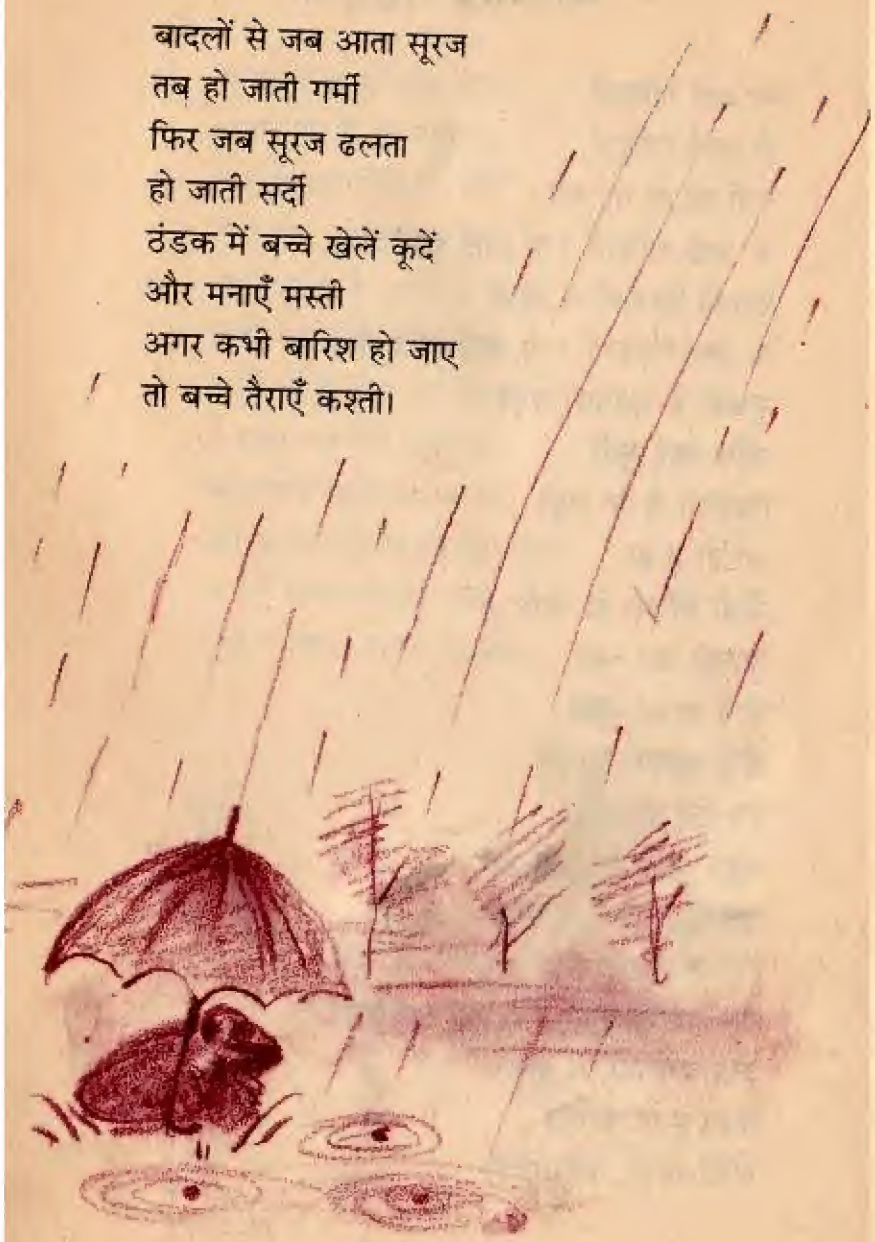

नदी

नदी तुम कहाँ जाती हो?
मेरी नाव को लेकर के तुम
कहाँ पर खो जाती हो?
जब मैं तुम पर लकड़ी डालता
उसको तुम तैराती हो,
पर मैं जब पत्थर को डालता
उसको क्यों डुबाती हो?
नदी तुम मेरे एक प्रश्न का
उत्तर तो सुझाओ,
तुम में खेलती मछलियाँ सारी
मुझको भी तो खेलाओ।

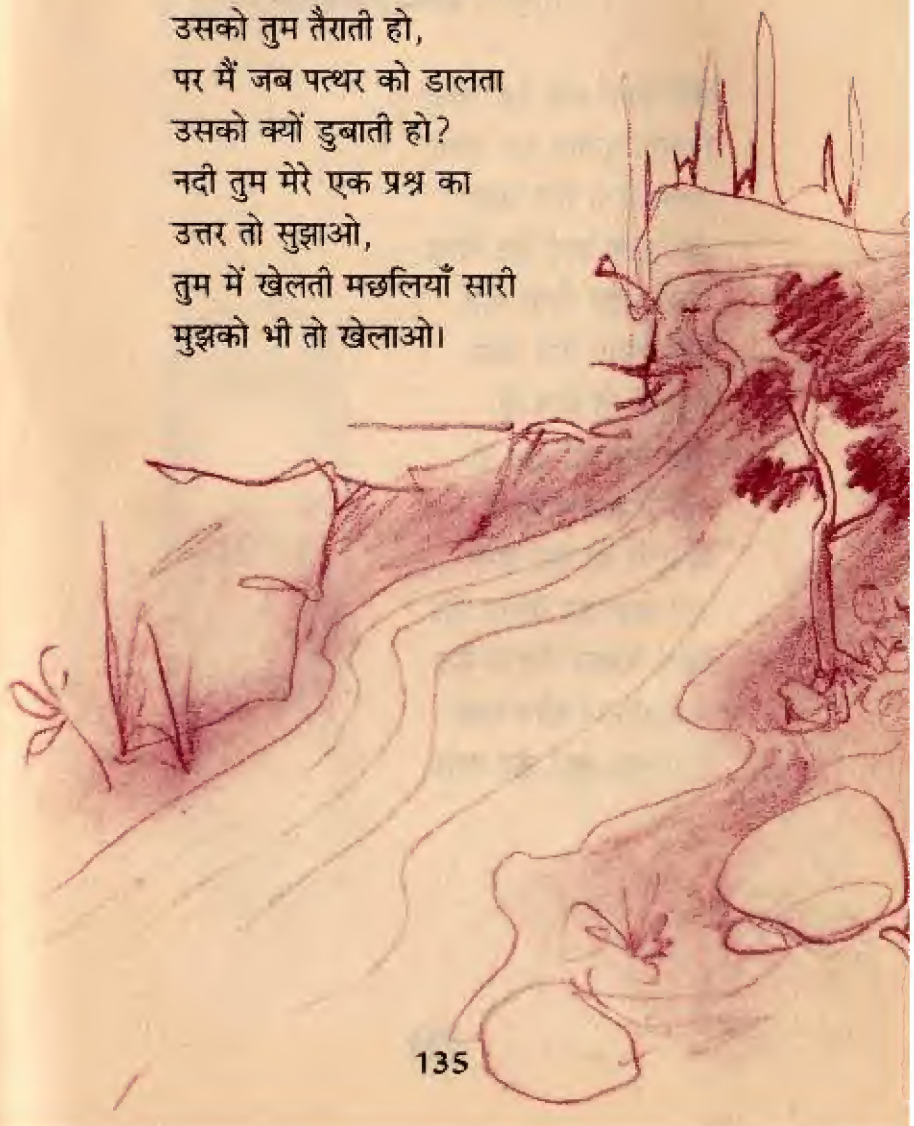

ऊँट चला

ऊंट चला भाई ऊँट चला
हिलता डुलता ऊंट चला
इतना ऊँचा ऊँट चला
ऊँट चला भाई ऊँट चला
ऊँची गर्दन ऊँची पीठ
पीठ उठाए ऊँट चला
ढालू हैं तो होने दो
बोझ ऊँट को ढोने दो
नहीं फँसेगा बालू में
बालू में भी ऊंट चला
जब थक कर बैठेगा ऊँट
किस करवट बैठेगा ऊँट
बता सकेगा कौन भला
ऊँट चला भाई ऊँट चला

लाल गाड़ी, पीली गाड़ी
हल्की गाड़ी और ट्रक भारी
रूक गई सारी की सारी
मन मसोस पुलकी ने की उतरने की तैयारी
कुर्सी पर उतारे पैर, फिर छलांग मारी
तब तक हरी बत्ती हो गई फिर से
और फिर...
वो आई गाड़ियाँ ! वो आई गाड़ियाँ!

लाल्टू

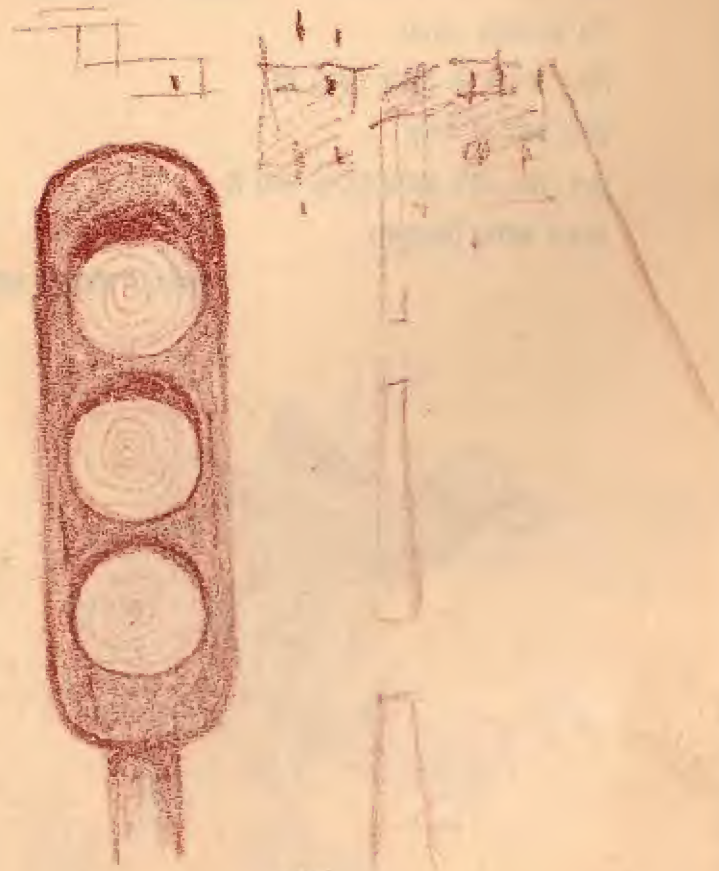

अंगूठे का गाना

हाथे गाँव के पाँडव पाँच
बरस्ते पाँख तुम्हारे
उनकी कहानी अनमूनी
ध्यान से बच्चों सुन ले
चारे थे-लंबे से उभरे
एक था बौना मोटा
जो कोई आता उसे चिढाना
मारे कोई फटका.....
सबसे दूर था उसका
सहता था अकेलापन
उसके बिना हर काम जो रूकता
याद तभी उसे करते सब.....
बंदर है मानव का पूर्वज
उसने भी तो सुना था
देखके सब चेष्टा बंदर की
खुद कर उसने गर्व किया
प्राणियों में क्यों श्रेण्ठ है मानव
तेज बुद्धि के कारण
उसके हाथ का अंगूठा है
सभी हुनर का कारण
[सूत्रधार क्या इसलिये गुरु द्रोणाचार्य जो पांडव राजकुमार अर्जुन को सर्वश्रेष्ठ धनुर्धारी बनाना चाहते थे - उन्होंने निषाद पुत्र एकलव्य का अंगूठा कटवाया - गुरू दक्षिणा के रूप में उसकी माँग करके]

टिक टिक टिक

टिक टिक टिक करती है घड़ी
सूरज का है वो प्रहरी
(टिक् टिक् टिक्)
धूल में खेले जब होली
अब आसमान से बरसेगी
कछुआ बहोत दूर कहीं
लौट के आयेगा यहीं
फिर भी दूसरे महफिल में
वो ही जगायेंगे हमें
हरी हरी हरियाली में
ढूँढ ही पायेगा उन्हें
दीवार पे घिसने लगते
झिमझिम बरसा ऋतु
आयेंगे ही काम में
इनसे भी कुछ सीख ले
(टिक् टिक् टिक्)

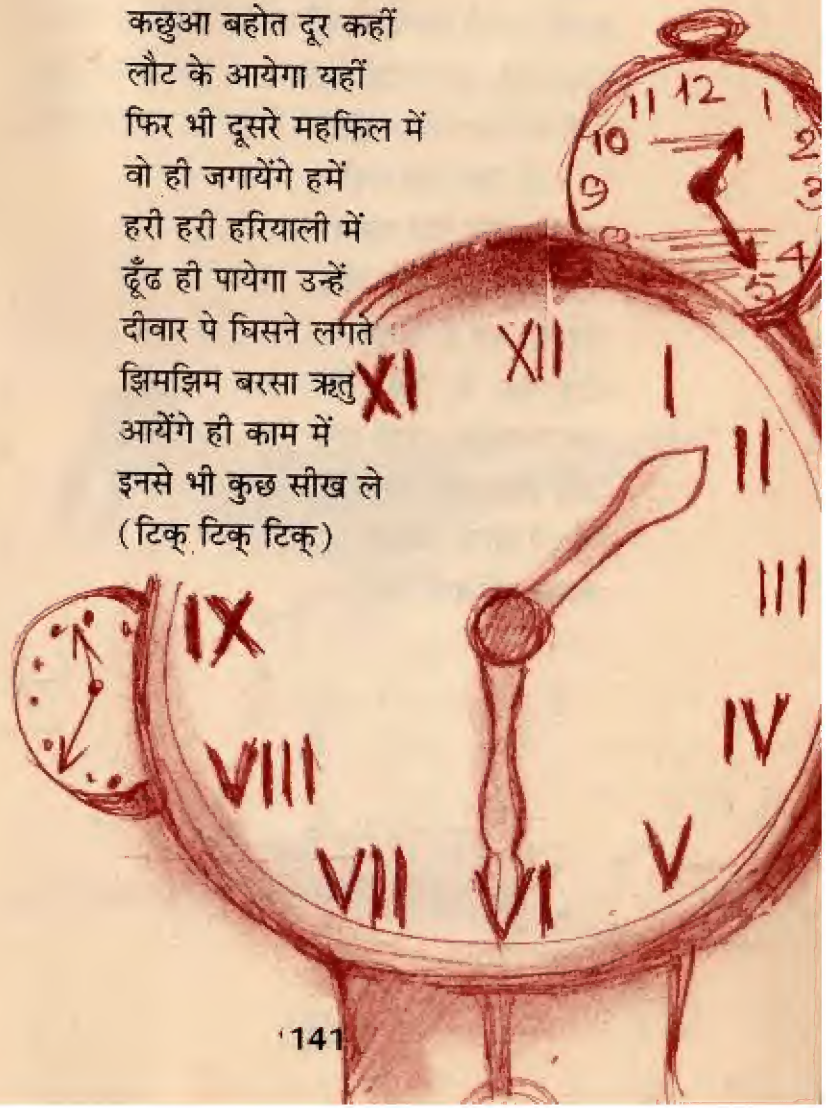

नाव

सुन्दर सी एक नाव बनाई
चुन्नू ने फिर उसे चलाई
छोड़ा उसको एक धार में
बढ़ी नाव फिर तेज़ धार में
जल्दी-जल्दी बढ़ती नाव
रूक-रूक चल पड़ती नाव
तेज़ी से फिर नाव बढ़ी
आगे थी एक नदी बड़ी
पकड़ा उसने तेज़ बहाव
पीछे छोड़े घर और गाँव
चुन्नू जी मन में खीझे
दौड़े नाव के पीछे-पीछे
नाव न उनके हाथ लगी
और तेज़ रफ़्तार बढ़ी
चुन्नू ने सोचा आखिर
जाकर पहुँचेगी सागर।

कितना

काला कौआ कितना काला
जितना सफेद होता बगुला
पर्वत की ऊँचाई कितनी
सागर की गहराई जितनी
सूर्य सतह कितनी उजियारी
अंधकार कहे 'मेरे जितनी'
धुप् अंधेरा धुप् कितना
दिये को डर लगता है जितना

घर प्यारा

सदा यही तो कहती हो माँ
घर यह सिर्फ़ हमारा अपना।
लेकिन माँ कैसे मैं मानूँ
घर तो यह कितनों का अपना।
देखो तो कैसे ये चूहे
खेल रहे हैं पकड़म-पकड़ी।
कैसे मच्छर टहल रहे हैं
कैसे मस्त पड़ी है मकड़ी!
और छिपकली को तो देखो
चलती है जो गश्त लगाती!
अरे कतारें बाँधे-बाँधं
कहाँ चीटियाँ दौड़ी जाती।
और उधर आँगन में देखो
पंछी कैसे झपट रहे हैं।
बिलकुल दीदी और मुझ जैसे
किसी बात पर झगड़ रहे है।
और यह देखो काक्रोच भी
दिन रात क्या यहीं ना रहते
क्यों रहते या इस घर में जो
इसे ना अपना घर समझते।
इसीलिए तो कहता हूँ माँ
घर ना समझो सिर्फ़ हमारा
पदा-सदा से जो भी रहता
सबका ही है घर यह प्यारा।

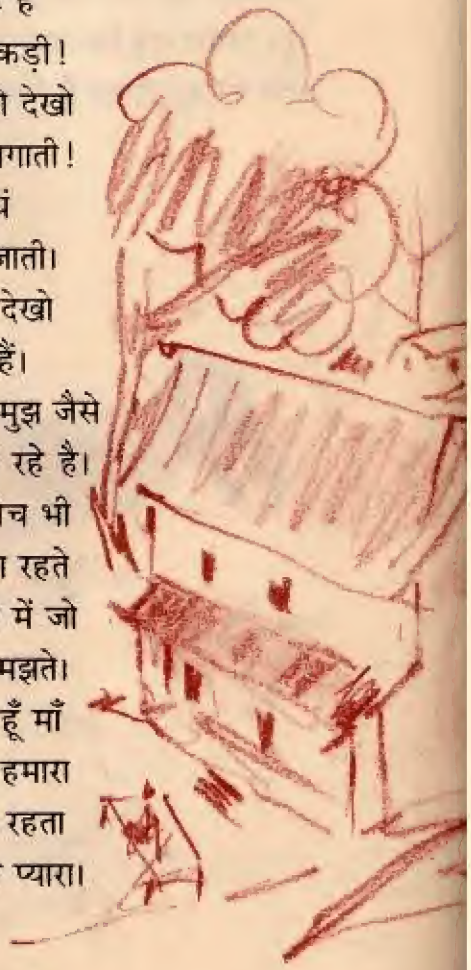

मीठे सपने, कवित किस्से

मीठे सपने, कविता क़िस्से
आता है अख़बार सुबह
मेरे घर में आ जाता है
जगते ही संसार सुबह
हुई शहर में कल क्या घटना
क्या उत्सव, क्या खेल हुआ
किसका भाषण मज़ेदार था
किसमें कैसे मेल हुआ
शब्द शब्द में हमें रोज़ ही
मिलता नया विचार सुबह
चीन और अमरीका, दोनों
मेल करेंगे कैसे अब
दुनिया का सुख दुख निर्भर है।
इन दोनों पर जैसे अब
क्या बाज़ार भाव है, घर में
होता ज्यों व्यापार सुबह

देश, विदेश, गाँव या जनपद
इन छह पत्रों में है सब
बिना टिकट घूमो सब दुनिया
इन पत्रों में चाहे जब
विश्व-महल में जाएँ, आता
बनकर उसका द्वार सुबह
वर्तमान में है जो घटना
वह इतिहास बनेगी कल
अख़बारों से उठता मानव
गिरता इनसे मुँह के बल
हम क्या करें, सोचने को यह
बनता है आधार सुबह
मीठे सपने कविता, किस्से
आता है 'अख़बार' सुबह।

खेल गीत

एक

आज की छुटटी
कल इतवार
परसों पड़ेंगे
डंडे चार
बंद करो ये
छुटटी छुटटी
नहीं बाँधनी
ऐसी मुठ्ठी
नहीं चाहिए
डंडे चार
भाड़ में जाए
यह इतवार

दो

मारा पीटी
धक्का मुक्की
जब देखो तब
बन्दर घुड़की
या कनबुच्ची
ऐसी हरकत
सचमुच टुच्ची